मंत्र·तंत्र·यंत्र विज्ञान

ज्योतिष विशेषांक

अप्रैल–९१

तीन चैतन्य कैसेट

जो अद्भुत दिव्य भाव है

ये कैसेट गागर में सागर हैं, अहोभाव हैं

★ मैं तुझ में तू मुझ में

गुरु जब शिष्य के भीतर अहोभाव, आत्म भाव जाग्रत कर देता है, तभी शिष्य पूर्ण होता है, और शिष्य पा लेता है अलौकिक तत्व, खुल जाते हैं समाधि के सात द्वार, भूल जाता है 'स्व', शिष्य क्या करे, कैसे करे, गुरु-शिष्य संबंधों का गुरु वाणी से रहस्योद्घाटन।

★ मोती-मोती माला पिरोई

एक साधना, एक सीढ़ी, साधक को आगे बढ़ाती है, एक मनका एक और उन्नति दिलाता है, अक्षय लक्ष्मी के सातों तत्वों की प्राप्ति की साधना का रहस्य, विवेचन—परत दर परत, निःसंदेह संग्रहणीय कैसेट।

★ काया कल्प साधना

स्वस्थ देह, स्वस्थ मन का आधार है, देह को ढाला जा सकता है, बनाया जा सकता है, विकृतियों, रोगों को हटाया जा सकता है, इसी शरीर के रोम-रोम को शुद्ध किया जा सकता है, जाग्रत किया जा सकता है, चैतन्य शरीर तत्व के लिए आवश्यक काया कल्प साधना के दो अनूठे प्रयोग।

गुरु अमृत वचनों की ये तीन महत्वपूर्ण कैसेटें आनन्द की एक नयी परिभाषा हैं, अपनी कैसेट अभी से सुरक्षित करा लें।

प्रत्येक कैसेट का मूल्य—२४)रु०

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)

वर्ष-११

अंक ४

अप्रैल-१९९१

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ स्व त्वं वदे वहतु वै इह श्रियै श्रियत्वं ।।

मैं 'स्व' हूं, पूर्ण हूं, ब्रह्म हूं, ब्रह्माण्ड का एक भाग ही नहीं पूर्ण ब्रह्माण्ड हूं, तुम मुझ में समा जाओ, मैं यह सब कुछ तुम्हें प्रदान कर दूंगा।

सिद्धि पुरुष

बनने की अपूर्व अलौकिक "शैव साधना"

जिसे

कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है

[शून्य में आसन लगाने एवं सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त करने के साथ-साथ गुरुदेव को अपने प्राणों में उतारने की अद्भुत अलौकिक साधना पद्धति]

यह अंक प्रेस में जा ही रहा था, कि एक दिन अचानक दोपहर को गढ़वाल के तांत्रिक, विद्वान और योगी, **स्वामी हरिहरानन्द जी** पत्रिका कार्यालय में आये, उनका उद्देश्य निकट भविष्य में होने वाला तांत्रिक सम्मेलन था, और वे उसकी रूप रेखा निश्चित करने के लिए आये हुए थे।

जब गुरुदेव संन्यासी जीवन में थे. तब हरिहरानन्द जी उनके साथ कई वर्षों तक रहे थे, और पूज्य गुरुदेव की निकटता और प्रियता प्राप्त की थीं, आज पूरे गढ़वाल प्रान्त में तथा बद्रिकाश्रम, केदार खण्ड में उन्हें **"सिद्धि पुरूष"** माना जाता है, और यह कहा जाता है, कि वर्तमान समय में उनके जैसा अद्वितीय योगी पृथ्वी पर नहीं है।

उन्होंने कई सिद्धियां प्राप्त कर रखी हैं, और पिछली बार कुम्भ में भी हमने उनके बारे में काफी कुछ सुना था, परन्तु उस बार वे कुम्भ में नहीं आ सके थे, और इस बात का हमें मलाल रहा था।

हमने उनके बारे में प्रामाणिक रूप से यह भी जाना था, कि उन्हें तंत्र क्षेत्र में कई सिद्धियां प्राप्त हैं, और कुछ नवीन तंत्रों का निर्माण उन्होंने अपने जीवन में किया है, वास्तव में ही उनका व्यक्तित्व अपने आपमें भव्य और विराट लगा, कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा था, कि कोई अघोरी या तांत्रिक हो, तंत्र और तांत्रिक की जो परिभाषा हमारे मानस में बनी हुई थी, वह इनको देखते ही धुल गई।

उन्नत ललाट, श्वेत व स्वच्छ वस्त्र पहिने हुए, ललाट पर त्रिपुंड लगाये हुए गर्व से उन्नत भाल, तथा आजानु बाहु, पूरा व्यक्तित्व अपने आपमें अत्यन्त प्रभावशाली लग रहा था, वृद्धता उनके शरीर पर दृष्टिगोचर हो रही थी; परन्तु फिर भी उनकी कद-काठी अपने आपमें मजबूत, दृढ़ और गरिमापूर्ण थी।

हमारी जिज्ञासा गुरुदेव के बारे में जानने की ज्यादा से ज्यादा थी, हम यह जानना चाहते थे, कि गुरुदेव के साथ उनका समय किस प्रकार से व्यतीत हुआ ? संन्यासी जीवन किस प्रकार था ? उसमें किस प्रकार की बाधाएं और विशेषताएं थी ? क्योंकि जब भी संन्यास जीवन की बात उठाते हैं, तो गुरुदेव उस पर से पूरी परत नहीं हटाते और इस वजह से थोड़ा बहुत जानने को मिलता है, परन्तु बहुत कुछ बिना जाने ही रह गया है, इसलिए हमारी सहज स्वाभाविक इच्छा थी, कि स्वामी हरिहरानन्द जी से पूज्य गुरुदेव के संन्यास जीवन के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की जाय, और साथ ही साथ हमारी एक जिज्ञासा और भी थी, कि आज गढ़वाल ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का नाम है, तंत्र के क्षेत्र में वे सर्वोपरि माने जाते हैं, और जो निकट भविष्य में विशाल तांत्रिक सम्मेलन होने जा रहा है, उसके संयोजन की सारी जिम्मेवारी स्वामी जी पर डाली गयी है ।

इसके साथ ही उन्हें शाक्त साधना, शैव साधना, आदि की भी प्रामाणिक और पूरी जानकारी है, मानसरोवर की उन्होंने कई बार यात्राएं की हैं, और बद्रीनाथ से मान-सरोवर पैदल गये हैं ।

उस दिन तो पूज्य गुरुदेव से उनकी भेंट नहीं हो सकी, रात्रि को उन्होंने कार्यालय के पास ही बने कक्ष में विश्राम किया, दूसरे दिन सुबह हम लोगों ने निश्चय कर लिया था, कि उनके अनुभवों को इसी अंक में दे दें, तो ज्यादा उचित रहेगा, और इसी इच्छा के कारण अंक को रोक रखा था ।

इसलिए हम लोग सुबह आठ बजे ही कक्ष की ओर चले गये, अन्दर स्वामी जी अकेले ही पालथी मारे साधना में रत थे, परन्तु हम सब ने यह आश्चर्य से देखा, कि उनका आसन जमीन से लगभग तीन फिट ऊपर हवा में ही स्थिर था, और उस आसन पर वे पद्मासन में सीधे बैठे हुए ध्यान में मग्न थे ।

हमारे लिए यह आश्चर्य तो नहीं था, क्योंकि कई उच्चकोटि के साधुओं और संन्यासियों के मुंह से यह सुन रखा है, कि उच्च कोटि की साधना जमीन पर बैठ कर करना संभव नहीं है, इसके लिए तो शून्य में ही आसन लगाना पड़ता है, और हमने इससे पहले एक-दो योगियों को इस प्रकार से आसन लगाये हुए देखा भी था, पर स्वामी जी को हमने जिस प्रकार से देखा वह अपने आपमें अवर्णनीय है, उनका आसन तो जमीन से तीन फिट ऊपर शून्य में था ही, साथ ही उनके सारे शरीर से ओंकार की ध्वनि स्वतः प्रवाहित हो रही थी, ऐसा लग रहा था कि जैसे पूरे शरीर से और शरीर के रोम-रोम से यह ओंकार की ध्वनि आ रही हो, यह ध्वनि भी बादलों की गड़गड़ाहट के समान अत्यन्त मधुर और आनन्ददायक प्रतीत हो रही थी, एकबारगी तो हमें ऐसा ही लगा कि जैसे कमरे में हलके-हलके बादलों की गड़गड़ाहट हो, और उस गड़गड़ाहट के बीच हजार-हजार कंठों से ओंकार की ध्वनि निकल रही हो ।

स्वामी जी पद्मासन में बैठे हुए थे, उनकी आंखें बन्द थीं, हाथ प्रणव मुद्रा लिये हुए थे, पीछे की ओर उनके लम्बे बाल लहरा रहे थे, और चेहरे के चारों ओर आभा मण्डल सा प्रतीत हो रहा था, ऐसा लग रहा था कि जैसे रोशनी का एक मुकुट पहिना गया हो ।

वास्तव में ही हम लोगों में से जिन ने भी यह अपूर्व, अलौकिक दृश्य देखा, वह अपने आप में अद्वितीय था, जब जीवन में पूर्ण सौभाग्य उदय होता है, तभी इस प्रकार का दृश्य देखने को मिल सकता है ।

हम निःशब्द एक तरफ हट कर खड़े हो गये, लगभग एक घण्टे तक वे इसी मुद्रा और आसन पर ध्यानस्थ बने रहे, फिर वे स्थिर हुए और धीरे से कमरे का दरवाजा थोड़ा और ज्यादा खोल कर बाहर निकले, उस समय उनके चेहरे पर अपूर्व तेज विद्यमान था ।

हम सभी आश्चर्यचकित और श्रद्धा से अभिभूत हो कर उनके बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, पहिले से ही उनका आसन बिछा रखा था, उनके बैठते ही हमने उनके बारे में जो कुछ देखा उसके बारे में जिज्ञासा की, तो उन्होंने अत्यन्त सरलता के साथ यह बताया कि यह सब कुछ मात्र गुरु-साधना से ही सम्भव है ।

साथ ही साथ उन्होंने बताया कि शैव पद्धति से गुरु-साधना की जाय तो वह संसार की अद्वितीय साधना हो सकती है, क्योंकि इस साधना में गुरु को शिव और शिव को गुरु मान कर इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है, सबसे बड़ी बात यह है, कि इस साधना का प्रभाव तुरन्त और अनुकूल होता ही है, और इसके द्वारा गुरु के पास जो असीम ज्ञान है, जो सिद्धियां हैं, वे स्वतः शिष्य को प्राप्त हो जाती हैं।

इसकी व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया, कि तंत्र के रूप में मैंने कोई विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं की है, परन्तु आज तन्त्र के क्षेत्र में अगर पूरे भारत वर्ष में और संसार में मेरा नाम है, तो इसके पीछे गुरु-कृपा और यह शैव साधना के माध्यम से गुरु-साधना ही है।

इस साधना की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी साधना है जिसमें कोई मन्त्र नहीं है, केवल एक विशेष पद्धति से गुरु को शिवमय बना कर अपने अन्दर उतारने की क्रिया होती है, और जिस दिन से यह साधना प्रारम्भ होती है, उसी दिन से उसे अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है।

इस साधना के माध्यम से व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ, विद्वान, और वाक् चतुर तो बनता ही है, उसके पूरे व्यक्तित्व में एक निखार आ जाता है, और एक चुम्बकीय व्यक्तित्व बन जाता है, यही नहीं अपितु कुछ समय बाद वह कई सिद्धियों का स्वतः अधिकारी बन जाता है, इन सिद्धियों के लिए हमें किसी प्रकार की साधना करने की जरूरत नहीं होती, और तीसरे चरण में उसका आसन अपने आप जमीन से ऊपर उठ जाता है, हवा में ही वह आसन स्थिर हो जाता है, और उसके सारे शरीर से ओंकार की ध्वनि निसृत होती रहती है।

हमारी जिज्ञासा के समाधान के लिए उन्होंने वस्त्रों के अन्दर से एक **पारदीय शैव्य शक्ति सम्पन्न शिवलिंग** निकाला, जो छोटा सा था परन्तु अत्यन्त ही दैदीप्यमान था, स्वामी जी ने बताया कि यह पारद से निर्मित शिवलिंग है, पर मात्र शिवलिंग ही नहीं है अपितु यह पूरे शरीर का काया कल्प करने, घर को पूर्ण सुखमय बनाने, तथा विविध साधनाओं में सिद्धि प्रदान करने में समर्थ है।

इस पारे से निर्मित "पारदीय शिवलिंग" की आवश्यकता इस साधना में रहती है, जो अपने आपमें ठोस चमकीला और मन्त्र सिद्ध होता है, **(इस प्रकार का शिवलिंग मात्र ३००)रु० न्यौछावर करने पर पत्रिका कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है, इसके लिए अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, सूचना देने पर वी.पा. से ऐसा दुर्लभ शिवलिंग केवल भारतवर्ष में रहने वाले साधकों को ही भेजने की व्यवस्था की जा सकती है)** इस शिवलिंग को अपने सामने रख कर, बिना पलक झपकाये बराबर देखते रहना ही यह सम्पूर्ण साधना है।

साधक सफेद वस्त्र धारण कर, सफेद आसन पर बैठ जाय और सामने इस पारदीय शिवलिंग को किसी पात्र में रख दें, और फिर एकटक इसे देखते रहें, इस बात का ध्यान र , आपकी पलक नहीं झपके और न आपका शरीर हिले, इस समय आपका मन अत्यन्त शान्त और पवित्र हो।

गुरुदेव का ध्यान और चिन्तन ही साधना पद्धति है, इसको नित्य प्रातःकाल चालीस मिनट तक सम्पन्न करना चाहिए, कुछ दिनों में आश्चर्य-जनक परिणाम देखने को मिलते हैं और सारे शरीर में एक दिव्यता आने लग जाती है, चेहरे के चारों ओर प्रभामण्डल बन जाता है, और साधक का सारा व्यक्तित्व चुम्बकीय आकर्षण युक्त एवं दिव्य बनने के साथ-साथ वह निश्चय ही शून्य में आसन लगाने में सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

यह साधना किसी भी सोमवार से प्रारम्भ की जा सकती है, इसके लिए दीपक, अगरबत्ती, पूजा विधान, या माला मन्त्र आदि की आवश्यकता नहीं होती।

पूज्य गुरुदेव के संन्यास जीवन के बारे में स्वामी जी ने बहुत कुछ बताया, जिसे हम अगले अंक में प्रकाशित करने जा रहे हैं।

कुछ नवीन सिद्ध प्रयोग

साधना प्रयोग वही सिद्ध कहा जा सकता है, जिसे आजमाने पर सफलता प्राप्त हो, जिस संकल्प भाव से, जिस उद्देश्य से वह प्रयोग किया जाय, उसमें पूर्ण सफलता नहीं तो थोड़ी बहुत सफलता अवश्य प्राप्त हो।

"नीली पुस्तक" से प्राप्त ये टोटके, ये प्रयोग केवल पत्रिका में ही पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं, और जिन साधकों ने भी इन्हें आजमाया है, उन्हें आशा से अधिक सफलता प्राप्त हुई है, वास्तव में ही यह पुस्तक एक धरोहर है, भारतीय ज्ञान, साधना और सिद्धि के दुर्लभ भण्डार की।

१-आत्म विश्वास वृद्धि प्रयोग

यदि आपमें आत्म विश्वास है, तो आप जिस कार्य को करने जाते हैं, वह आधा कार्य तो ऐसे ही सम्पन्न हो जाता है, अपने मन के हीन भाव को दूर करने हेतु यह एक सिद्ध प्रयोग है, आत्म विश्वास में शरीर गौण है, जो भाव अभिव्यक्ति होती है, वही महत्वपूर्ण है।

इसके लिए रविवार के दिन साधक प्रातः एक तांबे के लोटे में जल भर लें और उस जल में **"सिद्ध कुलाल चक्र"** डाल दें, और सूर्य के सामने मुंह कर इस जल का तीन बार अर्घ्य दें, फिर दायें हाथ में कुलाल चक्र ले कर मुट्ठी बन्द कर दें तथा सात बार इस जल गिरे स्थान की प्रदक्षिणा करें तथा केवल दूध का प्रसाद लें, और इस कुलाल चक्र को सफेद रेशमी वस्त्र में लपेट कर अपनी जेब में रख दें, जब भी कोई महत्त्वपूर्ण कार्य हो, इसे अपनी जेब में रख कर घर से बाहर निकलें, तो आश्चर्यजनक परिणाम आप स्वयं अनुभव करेंगे।

२-भविष्य में आने वाली विपत्ति का संकेत प्राप्त करना

यदि आने वाली विपत्ति का थोड़ा भी संकेत प्राप्त हो जाय, तो व्यक्ति उसके अनुसार अपने आपको ढाल लेता है, विपत्ति का सही रूप से सामना कर सकता है और बड़े नुकसान से बच जाता है।

शनिवार की रात्रि को प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में स्नान कर अपने सामने **"दर्शय चैतन्य रत्न"** एक काले वस्त्र पर रखें और इस विशिष्ट रत्न की ओर देखते हुए गुरु मंत्र नियमित रूप से बोलते रहें, ५१ बार मंत्र जप पूर्ण कर इस विशेष दर्शय चैतन्य रत्न को अपने ललाट के मध्य भाग पर स्पर्श करें और कम से कम पांच मिनट तक इसे छुआये रखें और फिर हाथ में इसे ले कर इसकी ओर देखें, आने वाली बाधाओं के दृश्य सामने स्पष्ट होने लगेंगे, चलचित्र की भांति दृश्य उपस्थित होंगे, उन्हें समझें।

३-शत्रु की शक्ति कम करने का विशेष प्रयोग

शत्रु चाहे छोटा हो अथवा बड़ा उसके कारण कार्यों में जो बाधाएं आती हैं, उससे मानसिक अशान्ति ही प्राप्त होती है और यदि शत्रु की शक्ति ही समाप्त हो जाय, तो शत्रु आपके लिए तुच्छ हो जाता है।

मगलवार के दिन साधक अपने काम पर निकलने से पहले पूजा स्थान में एक लाल कपड़े पर **"भैरव वज्र दण्ड"**, सरसों और काली मिर्च की ढेरी पर स्थापित करें, उसके चारों ओर एक गोल घेरे में ग्यारह अगरबत्ती जलाएं और प्रत्येक अगरबत्ती भैरव वज्र दण्ड से स्पर्श कर संकल्प लें कि इस अगरबत्ती की ही भांति मेरे **"अमुक"** (शत्रु का नाम) शत्रु की शक्ति क्षीण हो जाय और भैरव मत्र "ॐ भं नमः" का जप करते रहें, जब अगरबत्तियां पूरी तरह से जल कर राख हो जांय तो अगरबत्तियों की राख, भैरव वज्र दण्ड सहित सरसों और काली मिर्च, लाल कपड़े में बांध कर, शत्रु के घर के आगे फेंक दें, यदि शत्रु दूरस्थ स्थान पर रहता हो, तो उसका नाम लिख कर उसी पोटली में बांध कर एक गड्ढा खोद कर गाड़ दें, और ऊपर भारी पत्थर रख दें।

प्रयोग के २१ दिन के भीतर-भीतर अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

४-प्रेम में पूर्ण सफलता का विशेष प्रयोग

प्रेम चाहे मित्र से हो, स्त्री से हो, अथवा अपनी प्रेमिका से, प्रेम में सामने वाले की ओर से भी पूर्ण भाव प्रगट होना चाहिए, तभी प्रेम की सफलता है, आप प्रेम करते हैं, तो सामने वाला भी आपको प्रेम करने को तत्पर हो जाय, तभी जीवन में आनन्द आता है।

शुक्ल पक्ष की रात्रि में सोमवार के दिन चन्द्रमा उदय होने के पश्चात् चन्द्रमा के सामने मुंह कर बैठ जांय और अपने सामने पांच पुष्प रखें, प्रत्येक पुष्प पर एक-एक **"कामाक्षी कामांकुश"** स्थापित करें, कामाक्षी कामांकुश बीज के आकार का एक विशेष सिद्धिफल होता है, जो कि केवल आसाम के ऊपरी भाग के जंगलों में पाया जाता है, इसे सिद्ध कर प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

अब प्रत्येक सिद्धिफल पर दूध की छींटें डालें और जिसे अपने अनुकूल बनाना हो अथवा जिसे वश में करना हो, उसका यदि चित्र हो तो चित्र रखें अथवा नाम लिखें, उसके बाद हाथ में जल ले कर, उसे अपने अनुकूल बनाने का सकल्प लें और उसके नाम का २१ बार उच्चारण करें, अब दूध उसी स्थान पर बैठे हुए ग्रहण कर लें तथा सारी सामग्री एक पीले कपड़े में बांध कर रख दें और तीन दिन बीत जाने के पश्चात् प्रतिदिन एक कामाक्षी कामांकुश जल में प्रवाहित कर दें, पांच दिनों के पश्चात् ही अनुकूलता प्रारम्भ हो जाती है, और प्रेम सम्बन्धों में इच्छानुसार कार्य सम्पन्न होता है।

५-इच्छापूर्ति का विशेष प्रयोग

यह प्रयोग विशेष महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली इसलिए है, कि इसे सम्पन्न करते हुए साधक अपने कार्य के सम्बन्ध में जो भी छोटी-मोटी इच्छा व्यक्त करता है, वह अवश्य ही पूर्ण हो जाती है, यह तो दिन-प्रतिदिन का एक प्रयोग है।

शुक्रवार के दिन प्रातः जल्दी उठ कर गुरु-ध्यान तथा एक माला गुरु-मन्त्र का जप करने के पश्चात् घर में स्थापित शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल अर्पित करें और **"ॐ नमः शिवाय"** का जप करें. एक माला जप पूर्ण हो जाने के पश्चात् **"पांच गौ मुखी रुद्राक्ष"** एक-एक कर अर्पित करें, और मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पहले अपने मन की इच्छा को प्रकट करें, मन्त्र जप पूरा होते-होते मन में स्थिरता आने लगती है, और इच्छा के सम्बन्ध में कार्य भाव उत्पन्न होता है, और एक अनुकूल मार्ग प्राप्त होता है, किसी व्यक्ति विशेष से भेंट, कार्य की पूर्णता हेतु की गई कामना में यह प्रयोग विशेष फलदायक सिद्ध होता है, ध्यान रखें कि असभव कामनाएं न करें, जो कि बिल्कुल ही संभव न हों।

प्रयोग के पश्चात् किसी मन्दिर में जा कर शिवलिंग पर ये पांचों रुद्राक्ष चढ़ा दें। ●

नारगोल (गुजरात) का भव्य शिविर

समुद्र का किनारा, लहरों का गर्जन, ऊंचे-ऊंचे दरख्त, मन और तन को भिगोती हवाएं, पक्षियों का उन्मुक्त गुंजन, पीले वस्त्र धारण किये साधक-साधिकायें, वेद-मन्त्रों की ध्वनि, ध्यान एवं ज्ञान का योग, शरीर एवं मन की पीड़ाएं दूर करने के अद्भुत प्रयोग, वातावरण में सम्पूर्ण रूप से व्याप्त गुरु-वाणी, चैतन्य दीक्षा का अद्भुत दृश्य, सुगन्धित पुष्पों की भांति प्रवचन, पूज्य गुरुदेव के प्रति साधकों की श्रद्धा एवं भक्ति, अपने आपको पूर्ण बना लेने की प्रक्रिया, जीवन में रस घोलने की इच्छा, जीवन को नयी दृष्टि से चैतन्य करने का भाव और समर्पण—ये सब सम्पन्न हुआ नारगोल (गुजरात) में १२-१३-१४ अप्रैल ६१ को, जो शिविर में आया वह भूल गया अपना सब कुछ और जोड़ दिया अपने आपको पूज्य गुरुदेव से, जीवन में नये पुष्प खिलने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई।

शिष्य **प्रवीण जोशी** ने पूर्ण व्यवस्थित रूप से कार्य कर इतने साधकों को एकत्र कर आयोजन करने हेतु पिछले तीन महीनों में दिन-रात एक कर दिया, उनका यह प्रयास पूर्ण सफल रहा और शिविर कार्यक्रम पूर्ण रूप से सम्पन्न हुआ, धन्य हैं प्रवीण जोशी जिन्होंने आध्यात्मिक चेतना की एक नयी ज्योति अपने क्षेत्र में प्रज्ज्वलित कर दी, **जयेश भाई देशाई, भूपेन्द्र भट्ट, रमेश भाई जोशी, गणेश वटानी, नाग जी भाई, महेन्द्र ठाकुर** आदि शिष्यों का पूर्ण सहयोग रहा, पत्रिका परिवार एवं **"सिद्धाश्रम साधक परिवार"** द्वारा सभी को हार्दिक बधाई!

नवरात्रि शिविर–"निखिलेश्वर महोत्सव"

गुरु-धाम जोधपुर में आयोजित यह नवरात्रि शिविर सही मायने में **"निखिलेश्वर महोत्सव"** ही था, जिसमें मध्य प्रदेश, बंगाल, गुजरात, बंगलौर, सिक्किम, नेपाल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब के साधकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया, हर कोई जीवन से भाग कर नहीं आया था, वरन् जीवन की अपूर्णताओं को पूर्ण करने के लिए, जीवन को नये ढंग से जीने के लिए, नई दृष्टि से परखने के लिए पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आया था।

शिविर में नौ दिनों तक साधना, प्रवचन, ध्यान-योग का कार्यक्रम चलता रहा, शिष्यों का उत्साह बढ़ता हो रहा, **डॉ० एस०के० बनर्जी** ने शिविर का संचालन किया, **भाई भूमानन्द, भोलानाथ वाजपेयी, सुरेश,** और **राधा बहिन** ने संगीत का समा बांध दिया, **श्री छत्रपति सिंह 'पखावज वादन'** के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार हैं, उन्होंने जो संगीत का प्रवाह किया तो वातावरण संगीतमय हो गया, इस शक्ति पर्व में **'जगदलपुर'** के **श्री राधाकृष्ण कुशवाहा** के नूपुरों के साथ नृत्य सरिता का आनन्द प्रवाह था, **बहिन गौरी दिवेकर** ने **निधि, नेहा, निष्ठा,** के साथ जो नृत्य प्रस्तुत किया, वह साधकों को गुरु भक्ति में, समर्पण भाव में लीन कर गया।

मंच-सज्जा अद्भुत थी, हिमालय की कल्पना का साकार रूप था, जो पूज्य गुरुदेव के हिमालय में व्यतीत संन्यस्त जीवन की ओर संकेत कर रहा था, **"निखिल दिव्य ज्योति रथ"** के आमंत्रण हेतु, और अपने स्थान पर बुला कर पूजा कराने हेतु शिष्यों में मानों होड़ लगी थी, अभी रथ ने गुजरात की ओर प्रस्थान किया है।

पुराने शिष्य साधक – हरियाणा के–**सतीश कात्याल, सेलर ग्रीन,** हिमाचल के-**कर्मदत्त शर्मा, सुरेन्द्र गुप्ता 'निखिल'**, बम्बई के–**बी० एस० दुबे, रणजीत चौबे,** उत्तर प्रदेश के–**आर० एन० खन्ना, राजेन्द्र सिंह भदौरिया, वैद्य जी, हरीराम चौधरी,** गुजरात के–**प्रवीण भाई,** मध्य प्रदेश के–**बलराम पाटीदार 'पत्रकार'** आदि अपने-अपने क्षेत्र में **"सिद्धाश्रम साधक परिवार"** के कार्यों का लेखा-जोखा ले कर आये और गतिविधियों के विस्तार हेतु नयी योजनाएं प्रस्तुत कीं, और पूज्य गुरुदेव का मार्गदर्शन प्राप्त किया।

इस वृहद् परिवार में जुड़ रहे नये शिष्य साधक—

हिमाचल के–**अमर सिंह, कपूरा राम, राकेश शर्मा,** पंजाब के-**के०के० जिन्दल, गौतम ठाकुर, माखन कुमार,** हरियाणा के–**रणजीत पंचाले,** दिल्ली के–**स्वामी सत्यानन्द,** उत्तर प्रदेश के-**स्वामी असंग चैतन्य (कैलाश आश्रम ऋषिकेश), दीपक वर्मा, हरीश प्रसाद,** बिहार के **नूनू लाल मोहली, राजीव कुमार, अवधेश झा, श्याम सुन्दर,** कलकत्ता के–**कीर्ति विक्रम दास,** सिक्किम के–**ईश्वर गुरुंग,** उड़ीसा के–**रामपाल सेनापति,** मध्यप्रदेश के–**विजय सक्सेना,** गुजरात के–**दत्तानन्द गोपाल, डॉ० पी०आर० पटेल, महेन्द्र राठौर,** महाराष्ट्र के–**हीराभाई, किशोरी लाल, ए० एस० राय, सुरेन्द्र कापड़िया,** बंगलौर (कर्नाटक) के–**डॉ० एम०वी० कृष्णा मूर्ति** आदि पूर्ण संकल्पवान थे, और ये साधक ज्ञान और चेतना की जो नई शक्ति महोत्सव से ले कर जा रहे थे, उसे और भी अधिक प्रचण्ड रूप से अपने क्षेत्र में प्रवाहित करेंगे, हर कोई उत्साह, उमंग, जोश से भरा था, और पूर्ण आहुति के पश्चात् प्रत्येक के रोम-रोम से **'जय गुरुदेव'** की वाणी ही मानों फूट रही थी, यह बिछोह ही मन, प्राण आत्मा में एक प्यास, तड़पन जगाता है, जो शिष्य के संकल्प को और अधिक मजबूत करता है। ●

विभिन्न गतिविधियां

"सिद्धाश्रम साधक परिवार" भिलाई (म०प्र०) शाखा निरन्तर विशेष आयोजन सम्पन्न कर रही है, इस शाखा परिवार के अध्यक्ष श्री टी०आर० साहू के निर्देशन में प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को पूज्य गुरुदेव के सभी शिष्य, साधक, पत्रिका सदस्य एकत्रित होकर सामूहिक गुरु पूजन सम्पन्न करते हैं, गुरु-ध्यान व गुरु-मन्त्र जप किया जाता है, तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के वीडियो तथा आडियो कैसेटें देखी और सुनी जाती हैं, साधनात्मक विचार विमर्श किया जाता है, तथा माह के अन्तिम रविवार को बारी-बारी से गुरु-भाइयों के यहां गुरु-मन्त्र जप, गुरु-आरती व कैसेट सुनने का कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता है।

शिष्य श्री राजेश कुमार कटियार कानपुर क्षेत्र के अनेक स्थानों पर जाकर नारायण जप का आयोजन, गुरुपूजन, हवन इत्यादि सम्पन्न कराते हैं, पत्रिका में दिये साधना दिवसों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करते हैं, शिवरात्रि पर्व एवं होली के अवसर पर स्नेह मिलन एवं साधनात्मक गोष्ठियों का आयोजन किया गया, अनुभूतियां प्राप्त हो रही हैं, इन समर्पित शिष्यों को, जिन्होंने अपने आपको पूर्ण रूप से गुरुभक्ति में समर्पित कर दिया है।

सिद्धाश्रम अध्यात्म समाज बम्बई, ध्यान, योग, साधना के कार्यक्रम सम्पन्न कर रही है, इस संबंध में श्रीमती सरला पंड्या, श्री गणेश वटाणी, जसवंत डुमसिया, डॉ किशोर डभोया, श्री सूर्यकांत घेलानी आदि अत्यन्त समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं, आध्यात्मिक चेतना, गुरु-प्रवचन प्रसार में इनका समर्पण एक नयी चेतना जाग्रत करेगा, ऐसा ही पूर्ण विश्वास है, पूज्य गुरुदेव का यहां के सभी सदस्यों को आशीर्वाद। *

पुराने उपलब्ध अंकों के सेट

पत्रिका सेट १९८८—४०)रु०।
पत्रिका सेट—१९८९—५०)रु०।
पत्रिका सेट—१९९०—६०)रु०।

इसके अतिरिक्त सन् १९८७ तथा १९८६ के पूरे सेट उपलब्ध नहीं हैं, मात्र कुछ अंक बचे हैं अतः इसके बारे में कार्यालय से पत्र व्यवहार कर पहले जानकारी प्राप्त कर लें, फिर आर्डर भेजें।

गुरु पूर्णिमा "आनन्द-महोत्सव"

देश-विदेश के सभी शिष्यों की यही इच्छा रहती है, कि गुरु पूर्णिमा का महोत्सव उसके शहर में सम्पन्न हो और उसका आयोजन श्रेष्ठतम हो, तथा आयोजन का भार ग्रहण कर जीवन धन्य हो जाय, यह पर्व तो शिष्यों का ही पर्व है, ऐसे शिष्य ही जीवन में पूर्णता की ओर अग्रसर हैं।

इस बार दिनाङ्क २४, २५, २६ जुलाई को **"गुरु पूर्णिमा"** — अमृत, उल्लास मधुरता, पर्व का आयोजन शहर **'बंगलौर'** (राज्य कर्नाटक) में सम्पन्न किया जा रहा है, और आयोजन कार्य में अग्रणी हैं शिष्य– श्री गोवर्धन बी० वर्मा, श्री कुशल चन्द्र डी शाह, श्री रामनाथ, श्री बी.वी. प्रकाश, श्री कृष्णा मूर्ति आदि।

इस आयोजन को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने की जिम्मेदारी है सभी शिष्यों की, और इस **"गुरु पर्व"** पर उपस्थित हो कर अपना शिष्यत्व निभाना है।

पत्रिका के अगले अंक में पूर्ण जानकारी दी जा रही है, जिससे ट्रेन, बस, हवाई जहाज आदि का रिजर्वेशन अपनी-अपनी सुविधानुसार करा दें। ●

संकष्टी गणेश चतुर्थी
व्रत

ऋद्धि-सिद्धि के साथ आते हैं
गणपति
प्रत्येक घर में
जो इस प्रकार से इस साधना को सम्पन्न करते हैं

"शिव पुराण" में भगवान शिव स्वयं गणेश की स्तुति में कहते हैं—

यं यं कामयते यो वै तं तमाप्नोति निश्चितम् ।
अतः कामयमानेन तेन सेव्यः सदा भवान् ॥

अर्थात्, जो पूर्ण भक्ति से गणपति की पूजा-साधना करता है, उसके विघ्नों, संकटों का नाश होता रहता है, कार्य सिद्धि निरन्तर होती रहती है, उन्नति के इच्छुक, निर्धन, पूर्णता के इच्छुक, धन तथा सुख सौभाग्य को इच्छुक सभी स्त्रियों को यह व्रत-पूजन करना चाहिए, किसी वस्तु विशेष की कामना-अभिलाषा की पूर्ति इसी से संभव है।

गणेश आदि देव तथा पूर्ण देव माने गये हैं, जिनकी पूजा प्रार्थना का उल्लेख, विधान सबसे पहले आता है, और उसके पश्चात् ही हर कार्य सम्पन्न किया जाता है, विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न स्वरूपों में, श्री गणेश पूजन का विधान आया है ।

इन सब ग्रन्थों में एक बात सारभूत रूप में लिखी गई है, कि चतुर्थी तिथि ही गणपति की तिथि है, और इस दिन व्रत-अनुष्ठान का फल पूर्ण रूप से प्राप्त होता है ।

संकष्टी गणेश चतुर्थी

कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को निर्वाण तिथि कहा गया है, तथा वैशाख कृष्ण पक्ष की गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी है, यह विशिष्ट चतुर्थी मात्र तृतिया तिथि से प्रारम्भ होती है, इसीलिए "मुद्गल पुराण" में लिखा है, कि विद्धा गणेश्वर के व्रत में मात्र तिथि तृतिया से विद्धा चतुर्थी ग्रहण की जाती है, इसलिए तृतिया युक्त यह चतुर्थी ही गणेश चतुर्थी है ।

इसीलिए वैशाख कृष्ण पक्ष तृतिया मंगलवार दिनांक २-५-९१ को ऐसा मंगल मनोहारी, चन्द्रोदय व्यापिनी शुभ मुहुर्त है, जिस दिन पूजन का विधान, व्रत का विधान पूर्ण

रूप से सम्पन्न करना चाहिए, जिससे सभी संकट दूर हो सकें।

संकष्टी चतुर्थी मंगलवार से युक्त है, और इस प्रकार की एक चतुर्थी व्रत का पालन यदि साधक करे, तो उसे पूरे वर्ष की चतुर्थी व्रतों का फल प्राप्त होता है, और गणेश–गणपति स्थायी रूप से उसके घर में निवास करते हैं।

संकष्टी चतुर्थी चतुर्विध फल प्रदायिनी देवी है, और इस तिथि को गणपति की प्रकट तिथि माना गया है, जिसके संबंध में **"ब्रह्म वैवर्त पुराण के गणेश खंड"** में लिखा है, कि इस तिथि के व्रत के पूजन के प्रभाव तथा निरूपण और महात्म्य को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

कष्ट कैसा भी हो, दुःख कैसा भी हो, दारिद्रय कैसा भी हो, शत्रु दोष कितना ही प्रबल क्यों न हो, संकष्टी चतुर्थी पूजन पूर्ण निवारण दिवस है।

स्त्रियों के लिए भी इस दिवस का विशेष महत्व है, अपने लिये श्रेष्ठ वर प्राप्त करने की इच्छुक कन्याओं हेतु, पूर्ण सुखी वैवाहिक जीवन प्राप्त करने व गृहस्थ जीवन में श्री एवं सौभाग्य दोनों की निरन्तर वृद्धि के लिए यही व्रत, यही पूजन सर्वाधिक आवश्यक है।

साधना विधान

इस वर्ष की संकष्टी चतुर्थी मंगलवार के दिन है, इस कारण यह एक अमित दिवस है, रात्रि में चन्द्रोदय होने पर इस साधना का प्रारम्भ करना चाहिए।

इस साधना में **"संकर्षण गणेश विग्रह"** की पूजा ही सम्पन्न की जाती है, इसके अतिरिक्त **"संकर्षण शंख"** का पूजन तथा केवल **"कमलगट्टे की माला"** से मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।

साधना दिवस के दिन अपने पूजा स्थान में साधक **"गणेश चित्र"** लगायें, तथा गणपति की मूर्ति यदि हो तो स्थापित करें, और उसके सामने एक थाली में कुंकुम केसर, छिड़क कर मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर सकर्षण गणेश विग्रह स्थापित करें।

अब गणेश विग्रह के सामने नैवेद्य स्वरूप लड्डू तथा गुड़ में बने हुए तिल के लडडू अर्पित करें, हाथ में जल ले कर चारों ओर जल की प्रदक्षिणा बनायें और गणपति को नमस्कार कर अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर पुष्पांजलि अर्पित करें।

अब शान्त चित्त से गुरु का ध्यान कर अपने कार्य-सिद्धि की प्रार्थना हेतु साधना का आदेश-आशीर्वाद, पूर्ण मनोयोग से मन ही मन स्मरण कर, प्राप्त कर साधना पूजन प्रारम्भ करें।

सर्वप्रथम पूर्ण भक्तिभाव से गणेश मन्त्र—

॥ ॐ गं गणेशाय नमः ॥

इक्कीस बार जप कर गणपति को अर्घ्य प्रदान करें, इस पूजन में अर्घ्य का विशेष महत्व है।

अर्घ्य का तात्पर्य है, कि "मैं अपने सर्वस्व के साथ अपनी भक्ति, अपना ज्ञान, योग, शक्ति सभी कुछ अर्पित कर रहा हूं", गणेश अर्घ्य में गणेश स्तुति मंत्र निम्न प्रकार से है—

गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धि प्रदायक।
संकष्टहर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु सम्पूजित विधूदये।
क्षिप्रे प्रसीद देवेश गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इस श्लोक का उच्चारण करते समय श्लोक के पहले तथा श्लोक के पश्चात् 'संकष्टहरण गणपतये नमः' उच्चारित करें, इसके पश्चात् सकष्टी गणेश चतुर्थी तिथि को अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

इसके पश्चात् एक पात्र (लोटे) में चन्दन, कुश, दूब, पुष्प, चावल, दही और जल एकत्र कर, इस पात्र के ऊपर पूजा में रखा हुआ विशिष्ट सकर्षण शंख स्थापित कर दें, फिर उस पात्र को दोनों हाथों में रख कर इस जल का अर्घ्य चन्द्रमा की ओर मुख कर, बाहर खुले में चन्द्रमा की ओर देखते हुए अर्पित करें, और यह प्रार्थना करें—

गगनार्णव माणिक्य पूर्ण लम्बोदरस्तथा ।
विनायकं प्रसन्नास्म गणेश प्रतिरूपकः ।।

चन्द्रमा जीवन का अत्यन्त आवश्यक तत्व है, सुख, सौभाग्य, कामना-पूर्ति, रोग-बाधा प्रभाव निवारण तथा जीवन में सरसता, सौन्दर्य-तत्व, मधुरता के लिए चन्द्र-तत्व से बढ़ कर कोई तत्व नहीं है, इसलिए चन्द्रोदय व्यापिनी इस संकष्टी गणेश चतुर्थी का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है ।

गणेश पूजन विधान

अब साधक अपने सामने स्थापित संकर्षण गणेश विग्रह का पुनः पूजन करें तथा २१ पीपल के पत्तों की व्यवस्था पहले से कर गणेश के २१ नामों का उच्चारण करते हुए, प्रत्येक पत्ते पर नैवेद्य रूप में लड्डू अर्पित करें, ये २१ नाम तथा प्रत्येक नाम के साथ 'नमः' उच्चारण करते हुए समर्पण आवश्यक है—

सुमुखाय नमः — गणाधीशाय नमः
उमापुत्राय नमः — गजमुखाय नमः
लम्बोदराय नमः — हरसूनवे नमः
सूपकर्णाय नमः — वक्रतुण्डाय नमः
गुहाग्रजाय नमः — एकदन्ताय नमः
हेरम्बाय नमः — चतुर्होत्रे नमः
सर्वेश्वराय नमः — विकटाय नमः
हेम तुण्डाय नमः — विनायकाय नमः
कपिलाय नमः — वटवे नमः
भालचन्द्राय नमः — सुराग्रजाय नमः
सिद्धिविनायकाय नमः ।।

इसके पश्चात् दूब के दो पत्ते ले कर उसके साथ कुंकुंम, केसर, पुष्प तथा चावल गणेश विग्रह पर चढ़ाएं ।

यह पूजन क्रम समाप्त हो जाने के पश्चात् कमल गट्टे की माला से उसी स्थान पर बैठे-बैठे तीन माला मंत्र जप "संकष्टहरण गणपतये नमः" **मंत्र का जप करें, तत्पश्चात् आरती इत्यादि कर अपने स्थान को छोड़ें और गणपति पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण करें ।**

यह पूजन सायंकाल चन्द्रोदय होने के पश्चात् ही सम्पन्न किया जाता है, इस हेतु उस दिन पूरे दिन साधक को व्रत अवश्य ही रखना चाहिए, यदि पूर्ण निराहार न रह सके तो केवल दूध फल इत्यादि ही ग्रहण करना चाहिए ।

विशेष

पूजन में जिस **संकर्षण** शंख का प्रयोग किया जाता है उस शंख को किसी देव स्थान में, अर्पित कर देना चाहिए तथा गणपति विग्रह को अपने पूजा स्थान में सभी देवी देवताओं के आगे स्थापित कर देना चाहिए ।

"त्री स्थली सेतु" ग्रन्थ में लिखा है, कि यदि किसी विशेष संकट नाश का संकल्प ले कर यह सम्पूर्ण विधान इस तिथि को सम्पन्न किया जाय तो सात दिनों के भीतर-भीतर संकटनाश व अनुकूल फल प्राप्त होता है ।

'स्कन्द पुराण' के अनुसार जो पुरुष-धन धान्य की कामना से यह विधान करता है, उसे ऋद्धि-सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है ।

स्त्रियों के लिए व्रत का फल अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यदि स्त्रियां पुष्प, कुंकुंम, लाल धागा, महावर, धूप, दीप, गुड़ अदरक, दूध, खीर, नमक, इत्यादि से यह पूजन सम्पन्न करती हैं, तो उन्हें अक्षय सौभाग्य, गृहस्थ सुख लाभ, तथा घर में परिपूर्णता प्राप्त होती है ।

गणपति का यह विधान ऐसा पवित्र, उत्तम, शीघ्रफल-दायक विधान है, जिसे जो भी साधक, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा अविवाहित, स्त्री हो या पुरुष, सम्पन्न करे तो उसे अपने संकटों का समाधान तथा सौभाग्य प्राप्त होता ही है ।

काठमाण्डू – शिव लक्ष्मी साधना शिविर

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में " **नेपाल सिद्धाश्रम साधक परिवार** " द्वारा आयोजित यह "**शिव लक्ष्मी साधना शिविर**" तथा "**विश्व शांति महायज्ञ**" ध्यान, चेतना, दीक्षा, वेद वाणी, का रस भरा आयोजन ही था, जहां पूज्य गुरुदेव के स्वागत हेतु हवाई अड्डे पर भारत से भी पहुंचे असंख्य साधकों द्वारा हार्दिक स्वागत था, वहीं साधना स्थल "**जय निकेतन**" पूज्य गुरुदेव के स्थानीय शिष्यों से ठसाठस भरा था, शिष्यों के चेहरों पर मन का संकल्प, उत्साह झलक रहा था, हर कोई समर्पण से परिपूर्ण था।

नेपाल के प्रधान मंत्री "**श्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई**" ने पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से शिविर का उद्घाटन किया और सम्पूर्ण नेपाल की जनता की ओर से पूज्य गुरुदेव को "**सम्मान-अभिनन्दन पत्र**" समर्पित किया।

तीन दिनों के इस महाशिवरात्रि शिविर में शिष्यों ने पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों का आनन्द रस ग्रहण किया, अपने साधना तत्व को, अपने चिन्तन को, अमृत धारा से जोड़ दिया, पूज्य गुरुदेव द्वारा "**पशुपति दीक्षा**" ग्रहण की, और जीवन में एक अधूरे अध्याय को पूर्ण कर अपने आपको पूर्ण करने की दिशा में आगे बढ़ाया।

श्री सनद कुमार अधिकारी, श्रीमती जयन्ती लामा, श्रीमती नीलम पाण्डेय, श्री विष्णु कुमार राई, श्री व्यास लाल राजवंशी, डॉ० एस०के० बनर्जी के सम्पूर्ण प्रयासों से ही यह शिविर आयोजन हो सका, इन शिष्यों ने अपने आपको पूर्ण समर्पित कर दिया है "**सिद्धाश्रम साधक परिवार**" के प्रति, और निष्ठा पूज्य गुरुदेव के प्रति।

ऐसे सुन्दर आयोजन के लिए पूज्य गुरुदेव के सभी शिष्यों, सभी पत्रिका सदस्यों की ओर से इन्हें हार्दिक बधाई !

चेतावनी

श्री आर०बी० शुक्ला कुछ समय तक जोधपुर पत्रिका कार्यालय में रहे थे, पर उनकी दूषित मनोवृत्ति के कारण काफी समय पहिले उन्हें जोधपुर कार्यालय से निकाल दिया गया था, यहां रह कर उन्होंने किसी प्रकार का कोई ज्ञान प्राप्त नहीं किया।

सुना है, कि श्री राम बरन शुक्ल अपने आपको "**शक्ति पुत्र**" "**केवल मुझे ही यज्ञ कराने का अधिकार ब्रह्माण्ड से मिला है,**" "**गुरुदेव का पट्ट शिष्य**" आदि कह कर, लोगों को बेवकूफ बना कर धन ऐंठने की प्रक्रिया कर रहा है।

वह न तो पूज्य गुरुदेव का चैतन्य दीक्षा प्राप्त शिष्य था, और न मंत्र तंत्र आदि से संबंधित किसी प्रकार का कोई ज्ञान अथवा सिद्धि प्राप्त किया था।

अतः यदि वह "**गुरुदेव का शिष्य**" बताकर यज्ञ या प्रयोग या अन्य किसी भी प्रकार से धन प्राप्त करने का झांसा दे, तो संबंधित व्यक्ति इसकी रिपोर्ट पुलिस में कर दे, और यदि "**सिद्धाश्रम साधक परिवार**" या गुरुदेव के नाम पर धन प्राप्त किया है, तो वापिस वसूल कर लें।

१६-५-९१

अक्षय तृतीया

जो कि अक्षय लक्ष्मी प्रदायक दिवस है

एक बेमिसाल साधना दिवस

शास्त्रों में लक्ष्मी को समुद्र मन्थन के पश्चात् उत्पन्न होने वाला एवं सबसे उत्तम रत्न माना गया है, जिसका वरण भगवान विष्णु ने स्वयं किया, लक्ष्मी की इतनी अधिक महत्ता क्यों ? लक्ष्मी के बिना सब कुछ अधूरा क्यों ? क्या लक्ष्मी स्थायी रह सकती है ? क्या इस संबंध में शास्त्रों में विरोधाभास है ? आइये देखें लक्ष्मी स्वयं क्या कहती है ।

प्रत्येक व्यक्ति की यही इच्छा रहती है, कि उसके पास लक्ष्मी का स्थायी आवास हो, और उसे किसी भी प्रकार से आर्थिक दृष्टि से, पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो, लक्ष्मी का तात्पर्य केवल धन ही नहीं है, यह तो लक्ष्मी का एक अत्यन्त छोटा सा रूप है, लक्ष्मी के लिए एक गुण तो बहुत ही लघु पड़ जायेगा, महाकाव्यों में, आदि ग्रन्थों में लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों का, विभिन्न नामों का जो वर्णन आया है, उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना ही सही रूप में लक्ष्मी को प्राप्त करना है ।

लक्ष्मी का तात्पर्य है—सौभाग्य, समृद्धि, धन-दौलत, अच्छी किस्मत, सफलता, सम्पन्नता, प्रियता, लावण्य, आभा, कान्ति तथा राजकीय शक्ति—ये सब लक्ष्मी के स्वरूप हैं, और इन्हीं गुणों के कारण भगवान विष्णु ने भी लक्ष्मी को अपनी पत्नी बनाया, जब इन सब गुणों का समावेश होता है, और जो इनको प्राप्त कर लेता है, वही वास्तविक रूप से लक्ष्मीपति है ।

मनुष्य क्या है—आदि पुरुष भगवान विष्णु का अंश, उनकी सृष्टि का एक लघु स्वरूप, फिर क्या कारण है कि उसके पास लक्ष्मी का एक छोटा सा भी स्वरूप नहीं है, यह सत्य है कि लक्ष्मी के ये स्वरूप यदि किसी व्यक्ति के पास हो जांय तो वह पूर्ण पुरुष हो जाता है, यह संभव है।

लक्ष्मी जीतने की वस्तु नहीं है, जिसे जुए से प्राप्त किया जा सके, लक्ष्मी तो मन्थन अर्थात् प्रयत्न, अथक प्रयत्न, गहनतम साधनाओं का वह सुन्दर परिणाम है, जो साधक को उसकी साधनाओं के, उसके कार्यो के श्रीफल के रूप में उसे प्राप्त होती है, उस लक्ष्मी को वह अपने पास स्थायी भाव से रख सकता है, आवश्यकता इस बात की है कि वह कुछ करे, और इस कुछ करने के लिए उसके पास उचित मार्ग होना चाहिए, और यह उचित मार्ग उसे गुरु के निर्देश से प्राप्त हो सकता है ।

केवल धन की प्राप्ति ही सब कुछ नहीं है, धन तो लक्ष्मी का एक अंश है, क्या धन से रूप, सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं ? क्या धन से कान्ति, आभा प्राप्त कर सकते हैं? क्या धन से सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं ?

जो व्यक्ति लक्ष्मी का अर्थ केवल धन, मुद्रा और पैसे ही लेते हैं तो बहुत बड़ी गलती करते हैं, पूर्ण लक्ष्मी होने का तात्पर्य केवल पैसा ही नहीं है, अपितु सौभाग्य में भी वृद्धि हो, राजकीय सुख एवं शक्ति प्राप्त हो, वह जो कार्य करे, उसी के अनुरूप उसे यश प्राप्त हो—और यह यश श्रेष्ठ दिशा में होना चाहिए, लक्ष्मी के सम्बन्ध में जितने ग्रन्थ लिखे गये हैं, उतने ग्रन्थ शायद ही किसी अन्य विषय पर लिखे गये हों, जब व्यक्ति लक्ष्मी को पूर्ण रूप से प्राप्त कर लेता है, तो वह पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकता है, भौतिक सुख पूर्ण रूप से प्राप्त होने पर ही वह ज्ञान और वैराग्य के मार्ग पर बढ़ सकता है ।

मेरा तो यह कहना है, कि यदि कंगाल, निर्धन व्यक्ति घर छोड़ कर साधना की ओर, हिमालय की ओर, सन्यास की ओर भागता है, तो उसका वैराग्य शुद्ध वैराग्य नहीं है, यह तो सत्य से भागना है, क्या आंखों के आगे हाथ रख देने से सूर्य छिप सकता है ? सूर्य तो अपनी जगह स्थिर है, व्यक्ति अपनी आंखों के सामने पर्दा कर देता है, उसी प्रकार जो लक्ष्मी को तुच्छ कहते हैं, उसके संबंध में निन्दात्मक वाक्य लिखते हैं, वे व्यक्ति वास्तव में डरपोक, निर्बल और कायर हैं, जो जीवन में कुछ प्राप्त करने में असमर्थ होने पर इस जीवन के महत्व को ही नकारना चाहते हैं, लेकिन सत्य तो सूर्य की भांति है, जो छिप नहीं सकता।

लक्ष्मी की साधना एवं पूजन कब

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, कि धन कमाना ही केवल लक्ष्मी की साधना नहीं है, यह तो आपकी आजीविका तथा जीवन-चक्र को चलाने हेतु किये गये साधारण प्रयत्न हैं जिस प्रकार यदि अग्नि के ऊपर राख का आवरण आ जाय और समय पर उसे चैतन्य नहीं किया जाय, तो धीरे-धीरे वह अग्नि ही बुझ जाती है, और यदि फूंक मार कर राख हटा कर अग्नि को घी की आहुति दी जाय, तो वह एकदम से प्रबल हो कर ज्वाला रूप में प्रज्ज्वलित हो जाती है ।

लक्ष्मी का भी ऐसा ही विधान है, यदि साधना नहीं करेंगे, इसके लिए प्रयत्न नहीं करेंगे, इसको तीव्र नहीं करेंगे, तो धीरे-धीरे यह बुझ जायेगी, शान्त हो जायेगी, और जीवन में केवल राख बचेगी।

दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी का पूजन विशिष्ट माना जाता है, वह दिवस तो लक्ष्मी दिवस है, इसके अतिरिक्त विशेष बात यह है, कि लक्ष्मी का वार अर्थात् दिवस मूल रूप से बृहस्पतिवार है, और शुक्ल पक्ष का ही महत्व है, यह मुहूर्त अक्षय लक्ष्मी का सबसे सिद्ध मुहूर्त कहा गया है ।

जो साधक उचित समय पर अर्थात् उचित मुहूर्त पर विधि-विधान सहित साधना करता है, तो उसे फल की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है ।

अक्षय तृतीया का अदभुत् मुहूर्त

अक्षय तृतीया का महत्व भी उतना ही है, जितना दीपावली का सिद्ध मुहूर्त है, इस वर्ष अक्षय तृतीया दिनांक १६-५-६१ को आ रही है, और इसमें विशेष बात यह है, कि यह शुक्ल पक्ष में है,

और इस दिन बृहस्पतिवार भी है, जो कि लक्ष्मी पूजा का सर्वोत्तम मुहूर्त है

इसे अक्षय तृतीया इसलिये कहा गया है, कि इस दिन जो स्त्रियां सौभाग्य कामना हेतु पूजन करती हैं, उन्हें पूर्ण सौभाग्य प्राप्त होता है, जो व्यक्ति इस दिन लक्ष्मी साधना सम्पन्न करता है, उसे लक्ष्मी अक्षय रूप से प्राप्त होती है, अर्थात् लक्ष्मी का उसके यहां स्थायी रूप से आवास हो जाता है, गांवों में तो इस मुहूर्त की इतनी अधिक मान्यता है, कि इस दिन विवाह के लिए किसी पंडित को मुहूर्त दिखाने की आवश्यकता नहीं है, विवाह के लिये तो इसे पूर्ण मुहूर्त माना गया है, जीवन यात्रा प्रारम्भ करने के यह सौभाग्य दिवस है, अक्षय लक्ष्मी प्राप्त करने का पूर्ण दिवस है, शारीरिक सौन्दर्य, लावण्य, आभा प्राप्त करने का दिवस है, व्यक्तित्व में शक्ति प्राप्त करने का दिवस है ।

शाक्त प्रमोद में लिखा है, कि जो साधक अक्षय तृतीया के महत्व को जानते हुए भी पूजा साधना नहीं करता वह दुर्भाग्यशाली है ।

"वृहद रस सिद्धांत महाग्रन्थ" में अक्षय तृतीया के संबंध में लिखा है, कि यह दिवस जीवन रस की अक्षय खान है, उसमें से जितना प्राप्त कर सको, उतना ही यह रस बढ़ता जाता है ।

गृहस्थ तो पत्नी को भी गृह लक्ष्मी कहता है, उसके लिए अक्षय तृतीया अनंग साधना का दिवस है ।

पूजा में क्या आवश्यक है

अक्षय तृतीया के पूजन में मंगल घट, **'अक्षय लक्ष्मी शंख'**, श्वेत पुष्प, शुद्ध घी का दीपक, तथा **'दो मोती',शंख** रक्त चन्दन तथा इसके लिए **'कमलगट्टा माला'** आवश्यक ही है ।

इस अक्षय लक्ष्मी प्रदायक दिवस का साधना विधान अत्यन्त सरल है, और सही बात यह है, कि प्रत्येक गृहस्थ को इसे सम्पन्न करना चाहिए, लक्ष्मी का विशेष स्वरूप गृहस्थ से ही जुड़ा रहता है, और गृहस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन में, इच्छाओं, कामनाओं के साथ बाधाओं, भय यश-अपयश, सौभाग्य-दुर्भाग्य से जुड़ा होता है, इस कारण गृहस्थ तथा गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने वाले व्यक्ति के लिये यह आवश्यक है ।

अक्षय तृतीया अनंग दिवस है, कामना दिवस है, यह जीवन के उस भाग को पूर्णता प्रदान करता है, जो सृष्टि संचालन में सहायक है, इस दिन पूजा करने से कन्याओं को श्रेष्ठ वर की प्राप्ति होती है ।

पूजा का विधान

- सर्व प्रथम तो यह आवश्यक है, कि आपका घर साफ सुथरा एवं स्वच्छ होना चाहिए, जहां गन्दगी होती है वहां लक्ष्मी वास नहीं होता ।
- अपने पूजा स्थान में, साधना स्थल में, अथवा जिस कमरे में पूजा करें, उस जगह में आपको शान्ति अनुभव हो, अपना ध्यान केन्द्रित कर सके।
- पति-पत्नी दोनों साथ-साथ पूजा कर सकते हैं, इस विशेष दिन यदि किसी कार्य वश पति घर में नहीं है, तो पत्नी, पति के नाम का संकल्प भर कर साधना सम्पन्न कर सकती है ।
- साधना पूजा स्थान में सुगन्धित महकता हुआ वातावरण रखें इसके लिए सुगन्धित अगरबत्ती पूजा से पहले ही जला लें, उस स्थान पर इत्र इत्यादि छिड़कें ।
- साधक, सामग्री की पूर्व व्यवस्था कर साधना स्थल पर स्थान ग्रहण करें, और पूर्ण प्रेम से, प्रसन्न मन से, देवी का पूजन क्रम प्रारम्भ करें ।

अपने सामने एक बाजोट पर पीला सुन्दर रेशमी वस्त्र बिछाकर उसके बीचोंबीच चावल की ढेरी बनाकर उस पर पुष्प रखें और फिर मंगल घट अर्थात् कलश स्थापित कर दें, शुद्ध जल से आधे भरे इस कलश पर नारियल स्थापित करें, अब पूजा स्थान में घी का दीपक जला दें, एक ओर सुगन्धित धूप जला दें, अब इस मंगल घट के सामने चावल की ढेरी बनाकर दोनों मोती शंख स्थापित करें, इन मोती शंखों के आगे एक बड़ा विशिष्ट

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त अक्षय लक्ष्मी शंख स्थापित करें, प्रत्येक के ऊपर चन्दन तथा केसर का टीका लगायें एक-एक पुष्प रखें, मौली चढ़ायें, तथा मंगल घट के पास पूजा हेतु आवश्यक प्रसाद नैवेद्य अर्पित करें ।

ये दोनों मोती शंख अक्षय लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों के रूप हैं, और पूजा विधान में इनका विशेष महत्व है ।

अब साधक मूल पूजा प्रारम्भ करता है, लेकिन उसके पहिले विशेष बात तो आवश्यक है, कि इस सब व्यवस्था के पश्चात् साधक अपने आसन पर जिस प्रकार भी आराम से बैठ सकता है, पहले कम से कम दस मिनट तक गुरु का ध्यान करें, मस्तिष्क में विचारों का प्रवाह चलता रहेगा—उसे चलने दें, अपनी आंखें बन्द रखें, और अपने संकल्प को दोहराएं, न कि लक्ष्य को, धीरे-धीरे एक अपूर्व शान्ति पूरे शरीर एवं मन में छा जायेगी और यही समय है कि आप साधना प्रारम्भ करें ।

मन कहीं और दौड़ रहा है, और साधक पूजन कर रहा है, तो साधना में सफलता कैसे मिल सकती है ?

अब आप दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प लें कि—**"हे अक्षय लक्ष्मी ! अपनी ग्यारह शक्तियों सहित यहां स्थित हो कर मेरा पूजन सफल करें, और अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने हेतु आपकी शरण में यह साधक आपको अपना पूजन समर्पित कर रहा है",** ऐसा बोल कर जल छोड़ दें और पुष्प चढ़ाएं ।

अब मध्य में रखे हुए कलश में से नारियल हटा कर उसमें थोड़ा दूध, दही, घी, शहद अथवा शक्कर और एक पुष्प डालें, तथा नारियल पुनः स्थापित कर दें ।

अब अक्षय लक्ष्मी के ग्यारह स्वरूपों का पूजन प्रारम्भ होता है, प्रत्येक मोती शंख के आगे बीज मन्त्र का सम्पुट देते हुए उस पर पुष्प, चावल, कुंकुम, चन्दन तथा सुपारी अर्पित करें, प्रत्येक बार अर्पण के समय नीचे दिये गये मंत्र का क्रमानुसार जप करें, इस प्रकार प्रत्येक अक्षय लक्ष्मी सिद्ध मोती शंख के आगे पांच बार मंत्र उच्चारण होगा, क्रम इस प्रकार से है—

ॐ श्रीं अनुरागाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ ह्रीं सर्वादाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय ह्रीं नमः
ॐ श्रीं विजयाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ कमले वल्लभाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय कमले नमः
ॐ कमलालये मदाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय-कमलालये नमः
ॐ प्रसीद हर्षाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय प्रसीद नमः
ॐ प्रसीद बलाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय प्रसीद नमः
ॐ श्रीं तेजसे अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ ह्रीं वीर्याय अक्षय लक्ष्मी बाणाय ह्रीं नमः
ॐ श्रीं ऐश्वर्याय अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ महालक्ष्म्यै शक्त्यै लक्ष्मी बाणाय महालक्ष्म्यै नमः

इस प्रकार पूजन पूरा करने से अक्षय लक्ष्मी अपने सम्पूर्ण प्रभाव के साथ साधक को आशीर्वाद-अभय प्रदान करती है, साधक अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर प्रत्येक मोतीशंख पर तथा अक्षय लक्ष्मी शंख पर अर्पित करें और ग्यारह माला लक्ष्मीबीज मन्त्र का जप करें—

लक्ष्मी बीज मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्लीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

अब एक थाली में स्वास्तिक कुंकुम से बना कर उस पर दीपक अथवा आरती रख कर पूर्ण मनोयोग से लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें, तथा आरती के पश्चात् मानसिक रूप से गुरु ध्यान कर गुरु आशीर्वाद प्राप्त कर अपना स्थान छोड़ें ।

यह पूजा साधना अत्यन्त ही प्रभावकारी एवं हर साधक के लिए उपयोगी ही है, इसका विशेष मुहूर्त इस बार कई वर्षों बाद शुद्ध रूप में आया है ।

७-५-९१

कालाष्टमी

रात्रि को काली और कालभैरव की एक साथ साधना होती है इस दिन

क्योंकि यह शत्रु हन्ता प्रयोग है

"काल" अपने आपमें एक साधारण शब्द नहीं है, यह तो अपने भीतर एक पूरा संसार समाये हुए है, काल एक गतिमान तत्व है, और काल गति का, जीवन का अन्त भी है, यह विरोधाभास अद्भुत है, जो इस काल की गति को नहीं पहिचान सकता और इसको अपने अनुकूल नहीं कर पाता, वह काल के आधीन हो कर अन्त प्राप्त करता है।

जहां कालाध्यक्ष सूर्य हैं, वहां कालकंठ, काल-भक्ष शिव हैं, जो काल को अपने आधीन कर महा-काल बन गये, काल-चक्र जीवन का समय चक्र है, और कालरात्रि वह रात्रि, वेला है, जिसमें साधक काल-चक्र को अपने आधीन कर सकता है, कालहर-शिव को प्रसन्न कर सकता है, काल भैरव का अभय वर प्राप्त कर सकता है, काल की देवी काली की सम्पूर्ण सुकृपा प्राप्त कर सकता है, जिससे उसके काल-चक्र में अर्थात् जीवन-चक्र में स्थितियां अनुकूल बनती हैं, कालहरणम् अर्थात् उसके समय का नाश नहीं होता, अपितु वह काल को अपने आधीन कर देता है।

कालाष्टमी तो महापर्व है

काली का शाब्दिक रूप से अर्थ है–शिव पत्नी पार्वती, और काल भैरव का तात्पर्य है शिव, और इन दोनों तत्वों से ही यह काल-चक्र चलता है, जिसके जीवन में शिव-तत्व और शक्ति-तत्व नहीं है, उसका जीवन एक फुस्स सा है, मानों गुब्बारे में केवल हवा ही हवा भरी है जो बाहर से बड़ा दिखाई देता है, थोड़ी सुई चुभाई कि हवा निकल गई और वास्तविक स्थिति में आ गये, यह तो जीवन नहीं है, जीवन में होना चाहिए मूल रूप से शिव भाव, अर्थात् शुभ, मांगलिक, सौभाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि, स्वस्थता, शिवम् अर्थात् कल्याण, मंगल और गुरु का दरबार है–शिव लोक, जहां यह सब भाव प्राप्त होते हैं, तथा काली तत्व है,– तेज, अग्नि, संहार, क्षमता, तीव्रता।

जब तक जीवन में इन दोनों का संगम नहीं है, जीवन कुछ भी नहीं है, बस केवल जीवन को काटना है, उसे किसी तरह बिताना है, जीवन जीना नहीं है, कालाष्टमी– काल भैरव और काली की सिद्धि का वह दिवस है जिसके बिना जीवन में कुछ भी नहीं है, दोनों काली और काल

भैरव एक दूसरे के बिना अधूरे हैं, यह दिवस शत्रुहन्ता दिवस है

आपका शत्रु कोई व्यक्ति विशेष हो, यह आवश्यक नहीं, आपके जीवन के दुःख, आपके सबसे बड़े शत्रु हैं, शरीर का रोग आपका शत्रु है, कार्य की बाधाएं आपकी शत्रु हैं, निर्धनता आपकी शत्रु है, निर्बलता आपकी शत्रु है, कलह आपका शत्रु है, इनका नाश होना ही चाहिए, मधुर सरस जीवन के लिए यह आवश्यक है, काम करें और उसका फल प्राप्त हो, शरीर स्वस्थ रहे, सुगन्ध फैलती रहे, कीर्ति बढ़ती रहे, तो जीवन वास्तविक रूप से जीवन है ।

कालाष्टमी मुहूर्त

इस वर्ष कालाष्टमी का यह मुहूर्त ऐसा ही सिद्ध मुहूर्त आया है, जो कि काली और काल भैरव दोनों की संयुक्त सिद्धि का मुहूर्त है, इस साधना के सहस्र प्रकार हैं, तांत्रिक प्रयोग भी हैं और मांत्रिक प्रयोग भी, साधक को अपनी कामना, इच्छा के अनुसार प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, केवल आजमाने के उद्देश्य से किये गये प्रयोग में अभीष्ट सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती ।

यदि साधक अपने हृदय के समस्त द्वार खोल कर समर्पित भाव से यह साधना सम्पन्न करता है, तो उसे साधना में सफलता अवश्य प्राप्त होती है, उसके मन में प्राप्त करने की इच्छा होनी चाहिए, शिव और शक्ति दोनों तत्वों को अपने भीतर उतार लेने की इच्छा होनी चाहिए, और कालाष्टमी का यह दिवस उसके लिए पूर्ण प्रभावकारी मुहूर्त है जिससे चूकना ही नहीं चाहिए ।

पूजन-प्रक्रिया, साधना-विधि इतनी कठिन नहीं है, कठिन है अपने आपको एकाग्र कर साधना के लिए प्रवृत्त होना और इस काल-चक्र में अर्थात् साधना के समय सब कुछ भूल कर साधना करना ही महत्वपूर्ण है ।

साधना का यह अद्भुत विधान

इस साधना में सर्वप्रथम काली का पूजन किया जाता है, फिर भैरव का पूजन किया जाता है, फिर दोनों का संयुक्त पूजन किया जाता है, और इसके पश्चात् मंत्र जप का विशेष विधान है, जो इस विधि से पूजन पूर्ण करता है, उसके जीवन में भय का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है, और लक्ष्मी तथा प्रसिद्धि उसके अधीन हो जाती है, वह जो कामना ले कर कार्य करता है, उसमें उसके प्रयास पूर्ण रूप से सफल रहते हैं ।

यह साधना रात्रि साधना है, क्योंकि रात्रि में ही काली और काल भैरव अपने तीव्रतम रूप में जाग्रत रहते हैं, जब साधक शान्ति और एकान्त को अनुभव करें, तथा साधना में विघ्न न हो, तब उसे रात्रि में यह साधना प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए ।

साधना के आवश्यक तत्व

इस महासाधना में सामग्री विशेष महत्वपूर्ण है, और उसमें भी महत्वपूर्ण बात यह है, कि इस साधना में प्रयोग लाई गई सामग्री किसी अन्य साधना में प्रयोग नहीं की जा सकती, काली और काल भैरव दोनों का प्रयोग इस साधना से पूरे वर्ष सम्पन्न किया जा सकता।

इस साधना में आग्नेय योगपीठ मंत्र सिद्ध **'महाकाली यंत्र'** **'अभीष्ट सिद्धि अष्ट भैरव गुटिका'** **'शक्ति चैतन्य काली हकीक माला'**, **'११ तांत्रोक्त नारियल'** के अतिरिक्त पुष्प, अक्षत, अष्टगन्ध सिन्दूर, पंचगव्य, नैवेद्य, ग्यारह सुपारी, मौली (कलावा), गुलाल, अबीर, तिल, सरसों इत्यादि आवश्यक है।

साधना की प्रक्रिया

रात्रि को प्रथम प्रहर के पश्चात् साधक स्नान कर, काले वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में जाय, और एक कलश में जल से स्थान-शुद्धि, आसन-शुद्धि, सम्पन्न करे, उसके पश्चात् एक बड़ा तेल का दीपक जला ले, दूसरी ओर धूप अगरबत्ती, जलाये और फिर गुरु ध्यान कर आसन पर बैठे।

साधना के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, जिससे उसे बीच में उठना न पड़े, उसका ध्यान न बंटे, सामने एक लकड़ी के बाजोट (पीढ़े) पर लाल वस्त्र बिछा कर चारों ओर मौली बांध दें, एक ताम्रपात्र में काली यन्त्र, पुष्प रख कर स्थापित करें और उसके पास दूसरी सफेद अर्थात् स्टील की थाली या चांदी की थाली में अभीष्ट सिद्धि अष्ट भैरव गुटिका स्थापित करें।

गुरु ध्यान कर, मन को एकाग्र कर, अपने दोनों हाथों में पुष्पांजलि स्वरूप बना कर पुष्प रखें और यह प्रार्थना करें, कि "अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति हेतु मैं अमुक (अपना नाम) मन, वचन, कर्म देह से समर्पित हूं और मेरा यह पूजन, समर्पण स्वीकार करें" ऐसा बोलकर पुष्प अर्पित कर दें।

अब पहले महाकाली का ध्यान सम्पन्न करें अपने बांए हाथ में, सामने रखे कलश में से जल लेकर अपने शरीर के अंगों—सिर, मस्तक, नेत्र, नाक, कंठ, वक्षस्थल, दोनों हाथों पर लगाएं और जल छोड़ दें।

अब कुंकुम, केसर तथा दूध, दही से यंत्र पूजन करें और उस पर पुष्प चढ़ाएं, यन्त्र रखे हुए पात्र के चारों ओर एक गोल घेरा बना कर उस पर आठ सरसों की ढेरी बनाएं, प्रत्येक ढेरी पर एक-एक सुपारी रखें, अब देवी की इन शक्तियों का भी पूजन करें, तथा हाथ में पुष्प की पंखुड़ियां लेकर देवी की निम्न शक्तियों का नाम लेते हुए नमन करें तथा पुष्प अर्पित करते रहें।

ॐ कात्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः, ॐ कुरुकुल्लायै नमः, ॐ विरोधिन्यै नमः, ॐ विप्र चित्तायै नमः, ॐ उग्रायै नमः, ॐ दीप्तायै नमः, ॐ नीलायै नमः, ॐ घनायै नमः, ॐ वलाकिकायै नमः, ॐ मात्रायै नमः, ॐ मुद्रायै नमः, ॐ चित्रायै नमः, ॐ ब्रह्मै नमः, ॐ नारायणायै नमः, ॐ माहेश्वर्यै नमः, ॐ चामुण्डायै नमः, ॐ कौमार्यै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ वाराह्यै नमः, ॐ नरसिंहायै नमः ।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न कर पुनः देवी से प्रार्थना करें और अब भैरव और भैरवियों का पूजन प्रारम्भ करें ।

भैरव पूजन में आठ दिशाओं में आठ सरसों की ढेरी बना कर उस पर आठ तांत्रोक्त नारियल स्थापित करे, इसके पश्चात् एक तांत्रोक्त नारियल अपने पास में बांयीं ओर, दूसरा दायीं ओर, तथा एक तीसरा नारियल अपने पीछे रखें, इन सब की पूजा सिन्दूर से करें और लाल पुष्प चढ़ाते हुए, निम्न प्रकार से ध्यान करें ।

ॐ ऐं ह्रीं अं असितांगभैरवाय नमः, ॐ ऐं इं रुरुभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं उं चण्डभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं ऋं क्रोधभैरवाय नमः, ऐं ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं एं कपालिभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं ओं भीषणभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं वामांगभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं दक्षिणभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं शुद्धिभैरवाय नमः ।

इस प्रकार अष्ट भैरव और अपने दाएं, बांएं तथा पीछे पूजन सम्पन्न करें, ये सभी मंत्र शत्रु नाश के, बाधाहरण के लिए, प्रबलतम मंत्र है, साधक बिना किसी चिन्ता के यह कार्य सम्पन्न करें ।

अब काली और भैरव दोनों का संयुक्त पूजन दीपक से सम्पन्न करें संयुक्त पूजन में निम्न विधान है—

ॐ श्रीं भैरव्यै नमः	ॐ श्रीं भैरवी नमः
ॐ मं महाभैरव्यै नमः	ॐ महा भैरवी नमः
ॐ सिं सिंहभैरव्यै नमः	ॐ सिंह भैरवी नमः
ॐ धूं धूम्रभैरव्यै नमः	ॐ धूम्र भैरवी नमः
ॐ भीं भीमभैरव्यै नमः	ॐ भीम भैरवी नमः
ॐ उं उन्मत्तभैरव्यै नमः	ॐ उन्मत्त भैरवी नमः
ॐ वं वशीकरणभैरव्यै नमः	ॐ वशीकरण भैरवी नमः
ॐ मं मोहन भैरव्यै नमः	ॐ मोहन भैरवी नमः ।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न किया जाता है, इस पूजन क्रम में जो शक्ति का प्रवाह होता है, वह अद्भुत ही कहा जा सकता है, इसे साधक स्वयं अनुभव कर सकता है, इसके पश्चात् काली हकीक माला से पांच माला काली मन्त्र का जप सम्पन्न किया जाता है ।

काली सप्ताक्षर मन्त्र

॥ क्रीं हूं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

यह काली का मन्त्र है और इसके ऋषि भैरव हैं, इस प्रकार इस मन्त्र से काली और भैरव दोनों की साधना सम्पन्न की जाती है ।

अब मन्त्र जप सहित सारा अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तो यन्त्र इत्यादि को तो अपने पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए तथा दो अलग-अलग काले कपड़ों में काली के सामने स्थापित की गई सुपारी तथा सरसों की ढेरियां बांध दें, और दूसरे काले कपड़े में भैरव गुटिका के सामने स्थापित ग्यारह तांत्रोक्त नारियल और तिल बांध दें ।

उसी रात्रि को इसे अपने घर के बाहर गाड़ दें, और फिर पीछे मुड़ कर न देखें ।

यह साधना शक्ति की ऐसी साधना है जो साधक के जीवन में पूर्ण परिवर्तन ला सकती है, वह जो इच्छा कामना करता है, साधना में जिस प्रकार का संकल्प लेता है वह संकल्प अवश्य पूरा होता है ।

१४-५-१९९१

कुहू अमावस्या

जिस दिन जय-विजय

प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है

कुछ व्रत, पर्व, महोत्सव विशिष्ट होते हैं और इनका महत्व साधनाओं की दृष्टि से इतना अधिक होता है, कि साधक इन विशेष पर्वों पर केवल कुछ करने की प्रतिज्ञा सकल्प ही ले लेता है, तो भी उसे उस विशेष कार्य के संबंध में सफलता मिल ही जाती है।

मनुष्य पर सर्वाधिक प्रभाव चन्द्र ग्रह का पड़ता है, इसका कारण चन्द्रमा का पृथ्वी के सबसे निकट होना है, व्यक्ति के भीतर भी चन्द्र-तत्व सबसे अधिक विद्यमान है, चन्द्रमा का तात्पर्य है, शीतलता, मधुरता, श्रेष्ठता, कोमलता, ये सब तत्व व्यक्ति के भीतर अवश्य होने चाहिए, लेकिन केवल इन तत्वों की प्रधानता से जीवन का कष्टप्रद मार्ग नहीं कट सकता, कठिनाइयां अपने आप में एक कठोर तत्व हैं, जिसके लिए व्यक्ति को प्रबल होना ही पड़ता है, केवल सौन्दर्य रस, माधुर्य रस ही जीवन का तात्पर्य नहीं है, जीवन में चन्द्र-तत्व अर्थात् कोमलता आवश्यक है, तो कठोरता भी उतनी ही आवश्यक है, विजय प्राप्त करने के लिए, जीवन का मार्ग सरल बनाने के लिए कुछ कठोर करना ही पड़ता है।

अमावस्या ही क्यों ?

जय-विजय, पराक्रम, बल, तेज, तीव्रता की जितनी भी साधनाएं हैं, उनमें अमावस्या का मुहुर्त ही सिद्ध मुहुर्त माना गया है, अमावस्या एक विशेष तंत्र प्रयोग दिवस है, जिस दिन रात्रि को ही साधना सम्पन्न की जाती है, अमावस्या की रात्रि को काल-रात्रि कहा गया है, जिस दिन प्रभाव "यम तत्व" का अर्थात् जो सम्पूर्ण है, विजय प्रद है, तीक्ष्ण है, वही तत्व प्रबल रहता है।

अमावस्या की रात्रि को निर्बल से निर्बल साधक भी पूजा साधना सम्पन्न करता है, तो उसमें विशेष आत्म-विश्वास आ जाता है, शरीर में पराक्रम भाव बढ़ने लगता है, तथा अपनी बाधाओं पर, अपने शत्रुओं पर उसे विजय प्राप्त होती है।

जीवन में आगे बढ़ने की क्रिया दूसरों का नाश करने की क्रिया नहीं है, अथवा गलत को सही करने की प्रक्रिया नहीं है, यह तो अपने ज्ञान, बुद्धि का पूर्ण उपयोग करते हुए, अपनी शक्तियों को जाग्रत कर, बाधाओं को हटाकर उन्नति करने की प्रक्रिया है, बाधा चाहे व्यक्ति रूप में हो अथवा किसी अन्य रूप में, इसका नाश करना तो आवश्यक ही है, और इस प्रकार की साधना के लिए कुहू अमावस्या का मुहुर्त अपने आप में अत्यन्त सिद्ध एवं प्रबल मुहुर्त है।

इस रात्रि को साधक जब साधना सम्पन्न करता है, तो उसे ऐसा लग सकता है, कि मानों उसके शरीर में अन्दर ही अन्दर कोई विखण्डन प्रक्रिया हो रही है, शरीर

टूटता हुआ सा अनुभव होता है, और यही इस विशेष साधना का महत्व है, यह प्रक्रिया ही उसे श्रेष्ठता की ओर ले जाती है, आत्म-बल का तेज भरने लगता है, और ऐसे में साधक कोई विशेष संकल्प कर कुहू अमावस्या का प्रयोग सम्पन्न करता है, तो उसे निश्चित तौर पर सफलता मिलती है ।

कुहू अमावस्या सिद्धि दिवस

- यह सिद्धि दिवस मूल रूप से शक्ति दिवस है, इस रात्रि को शक्ति से संबंधित कोई भी प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है ।
- शक्ति का यह प्रयोग शारीरिक शक्ति को उन्नत करने के लिए, अर्थात् किसी विशेष स्वास्थ्य बाधा को दूर करने के लिए किया जा सकता है ।
- यह विशेष प्रयोग अपने किसी प्रबल शत्रु को शान्त करने के लिए तथा अपने अनुकूल बनाने के लिए किया जा सकता है ।
- यदि किसी कार्य में मन एकाग्र नहीं हो पाये और कार्य पूर्णता का मार्ग न दिखाई दे, तो इस प्रयोग को करने से शक्ति का जागरण होता है ।
- यदि किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग किसी व्यक्ति विशेष पर किया हुआ हो, जिसके कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया हो, तो कुहू अमावस्या प्रयोग से यह बाधा दूर हो सकती है ।
- यह प्रयोग कोई भी स्त्री अथवा पुरुष, विवाहित अथवा अविवाहित कर सकते हैं ।
- वाणी संबंधी दोष इस साधना से दूर होता है, एक प्रकार से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है, आवाज में प्रभाव एवं मिठास उत्पन्न होता है ।
- कुहू अमावस्या के अनुष्ठान को "कुहनिका" कहते हैं, इसका तात्पर्य है, अपने कार्य की पूर्ति हेतु, अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु कड़ी साधना का अनुष्ठान ।

साधना प्रयोग

यह सरल साधना इस विशिष्ट अमावस्या की रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात्, अर्थात् १० बजे के पश्चात् सम्पन्न की जाती है, इसके पहले साधक अपनी दिनचर्या नियमित रूप से सम्पन्न कर सकता है ।

इस विशेष प्रयोग में इस बात का महत्व है, कि जिस कार्य की पूर्ति हेतु अथवा जिस संकल्प को ले कर अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय, उसे गुप्त ही रखना चाहिए, यदि संकल्प के बारे में पहले से ही प्रकट कर दिया जाता है, तो सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती है ।

साधक किसी शान्त स्थान का अनुष्ठान के लिए चयन करें जिससे कि उसे साधना में विघ्न न हो, सायंकाल से उस स्थान को साफ स्वच्छ कर, गुरु पूजन कर, गुरु मन्त्र का शान्त भाव से जप करें, इससे मन में चेतना उत्पन्न होती है, एकाग्रता प्राप्त होती है, इच्छा शक्ति के द्वार खुलते हैं, और गुरु-कृपा से साधना में सफलता प्राप्त होती है ।

कुहू सिद्धि देवी पूर्ण रूप से शक्ति साधना है, "ह्रीं" बीज मन्त्र है, इस देवी की आठ शक्ति स्वरूप हैं, जिनका पूजन विधि के अनुसार करना चाहिए ।

इस विशेष साधना में साधक को साधना में बैठने के पश्चात् प्रयोग पूरा करके ही उठना चाहिए, इसलिए आवश्यक साधना सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए ।

इस साधना में जल पात्र, दीपक के अतिरिक्त साधना-पूजन की सामग्री कुंकुम, सिन्दूर, पुष्प, नैवेद्य, सुपारी आवश्यक है, इसके साथ **"आठ शक्ति चक्र"** **"आठ सिद्धि फल"** तथा मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"जय विजय कुहू यन्त्र"** आवश्यक है ।

सायंकाल के पश्चात् साधक स्नान कर धुली हुई स्वच्छ गहरे रंग अर्थात् लाल या काली रंग की धोती पहिन लें,

और साधना स्थल पर जा कर गुरु चित्र के सामने आसन पर बैठ कर गुरु पूजन कर, गुरु मन्त्र का शान्त भाव से जप प्रारम्भ करें, पूजा स्थान में ही अगरबत्ती तथा तेल का दीपक अवश्य जला लें, पूरे प्रयोग के समय यह दीपक जलते रहना चाहिए, दीपक की लौ का मुंह साधक की ओर होना चाहिए।

अपने सामने एक ताम्र पात्र में पुष्प का आसन बना कर उस पर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'जय विजय कुहू यंत्र'** स्थापित करें, तथा उस पर कुंकुम, सिन्दूर इत्यादि अर्पित करें, फिर अपने हाथ में जल ले कर जिस कार्य को पूरा करना चाहते हैं, उसका संकल्प लें और जल छोड़ दें।

पुनः जल ले कर पात्र के चारों ओर जल का घेरा बनाएं तथा शक्ति मुद्रा में बैठ कर देवी को ध्यान करें—

"हे अष्टसिद्धियों की अधिष्ठात्री देवी! जिसके शरीर से अग्नि का प्रवाह है, जय विजय स्वरूप दो चक्र हैं, मुझ साधक को पूर्ण सफलता प्रदान करें, मैं आपकी शक्तियों का पूजन करता हूं।"

अब साधक अपने सामने आठ पान के पत्ते रखें, प्रत्येक पत्ते पर एक-एक शक्ति चक्र स्थापित करें, एक-एक पुष्प रखें तथा प्रत्येक पत्ते पर सिन्दूर की टीकी लगाएं
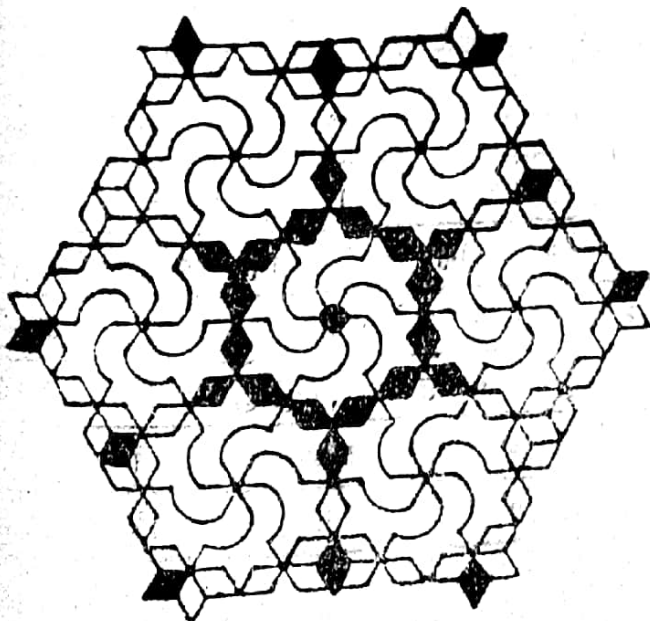
और प्रत्येक शक्ति का ध्यान करते हुए उस पर एक-एक सिद्धि फल चढ़ाएं, यह क्रम निम्न प्रकार से होना चाहिए—

ॐ ब्राह्मी नमः
ॐ कौमारी नमः
ॐ वैष्णवी नमः
ॐ वाराही नमः
ॐ इन्द्राणी नमः
ॐ चामुण्डा नमः
ॐ महालक्ष्मी नमः
ॐ व्योमेश्वरी नमः
ॐ सप्त दीपेश्वरी नमः
ॐ कामेश्वरी नमः
ॐ माहेश्वरी नमः ॥

इस प्रकार प्रत्येक शक्ति का पूजन करते हुए उस पर सिन्दूर, कुंकुम, चावल तथा पुष्प चढ़ाएं, प्रत्येक मन्त्र का ग्यारह-ग्यारह बार जप करें, अब दीपक को उठा कर सामने रखे हुए यन्त्र के आगे रख दें और साधक **'स्फटिक माला'** से मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ करें—

मन्त्र

॥ ऐं ह्स्ख्फ्रें जय विजयायै नमः ॥

जब इस मन्त्र की पांच मालाएं सम्पन्न हो जांय तो साधक अपने स्थान पर खड़े हो कर पुष्प पंखुड़ियां यंत्र पर तथा सामने ग्यारह शक्तियों के शक्ति चक्र पर अर्पित करें, इसके पश्चात् देवी की आरती सम्पन्न कर सामने चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण कर पूजा स्थान से प्रस्थान करें।

यह साधना सरल होते हुए भी अपने अभीष्ट मुहूर्त एवं प्रभाव के कारण प्रबल ऊष्मा देने वाली है।

ऐसा भी देखने में आया है, कि इस साधना को सम्पन्न करते-करते साधक को अत्यधिक गर्मी का अनुभव होता है, पसीना आने लगता है, लेकिन साधक इन सब बातों को भूल कर पूजन तथा साधना सम्पन्न करता रहे।

दूसरे दिन प्रातः यंत्र को तो अपने पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए, तथा शक्ति चक्र एवं सिद्धि चक्र को एक साथ एक लाल कपड़े में बांध कर अपने व्यापार स्थल पर, अपने ऑफिस में अथवा अपने टेबल की दराज में रख देना चाहिए। ●

१८-५-१९९१

संन्यास–जीवन का नवीन निर्माण

सुप्त शक्तियों को जाग्रत करने की प्रक्रिया

संन्यास शब्द साधारण रूप से गृहस्थ शब्द का विपरीत शब्द माना जाता है, गृहस्थ का तात्पर्य है, जो गृह से जुड़ा हो, जो जीवन के सभी रसों से जुड़ा हो, जो जीवन में सब रसों को प्राप्त करना चाहता हो, वह गृहस्थ है, तो अब यह प्रश्न उठता है, कि क्या गृहस्थ व्यक्ति संन्यासी हो सकता है, अथवा नहीं ? यदि गृहस्थ और संन्यास एक दूसरे के विपरीत जाने वाली स्थितियां हैं, तो इनका मिलन कभी हो ही नहीं सकता ।

इस अर्थ ने ही सबसे बड़ा अनर्थ किया है, गृहस्थ विभिन्न स्थितियों से जुड़ा एक ऐसा तत्व स्वरूप है, जिसमें उसके मन की मर्जी के अनुरूप कार्य हो ही नहीं सकता, वह तो दूसरों द्वारा विभिन्न दिशाओं में खींचा जाने वाला प्राणी है, उसका प्रत्येक कार्य दूसरों की इच्छा के अनुरूप होता है, नियमों की पालना गृहस्थ के लिए सबसे अनिवार्य तत्व है, उसे इस प्रकार कार्य करना है, कि वह कमाये और दूसरे भोग करें, वह अपने संबंधों में मर्यादा रखे, उसके व्यवहार में मर्यादा हो, उसके हर कार्य में, उसकी हर इच्छा में एक वर्जना है, सीमा है, जिसको वह लांघ नहीं सकता है, फिर मूल प्रश्न है, कि क्या गृहस्थ संन्यासी बन सकता है ?

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, संन्यास का तात्पर्य है, त्याग, अपने आपको भूलना संन्यास कहा गया है, संन्यास में वह भाव है, जो व्यक्ति को एक पुरानेपन से, जड़ता से, स्थिर स्थिति से तोड़ता है, गृहस्थ व्यक्ति एक सीधी लीक पर चलने का कोशिश करने वाला तारों से विभिन्न दिशा में खींचा जाने वाला व्यक्ति कहा जा सकता है, वह अपने मन में यह सोच कर भले ही प्रसन्न हो जाय कि वह अपनी बुद्धि से अपना जीवन निर्माण कर रहा है, लेकिन उस निर्माण की भी सीमाएं हैं, कुछ विशेष मर्यादाओं का तो वह उल्लंघन कर ही नहीं सकता ।

सन्यास का अर्थ

और संन्यास है, जीवन में नये संस्कार लाने का प्रयोग, अपने आप को शुद्ध करने का प्रयोग, जिससे कि यह प्रदूषित मन स्वस्थ होकर अपनी ताजगी, अपना पूरा सौन्दर्य प्रकट करे, सन्यास अपने आपका स्वनिर्माण करने की प्रक्रिया है, जिसमें यह बन्धन नहीं है, कि आप क्या थे, सन्यास ता वह तत्व है, कि आप क्या बनने जा रहे हैं, संन्यास तो अन्तर्मन में नवीन ज्योति जगाने की प्रक्रिया है ।

क्या संन्यास जीवन से भागना है ?

सन्यास न तो भगवे कपड़े धारण करने की प्रक्रिया है, और न ही जीवन से भागने की प्रक्रिया है, सन्यास बुद्धि को आत्म निर्भर बनाने की क्रिया है, संन्यास रेचन अर्थात् शुद्धि की क्रिया है, जो मन पर पड़े भार को हटाने की क्रिया है, जिससे बुद्धि स्वस्थ रूप में विकसित हो सके, आप अपनी इच्छानुसार कार्य कर अपना विकास कर सकें, इस विकास की गति में किसी प्रकार की रुकावट नहीं आये, मन में ताज़गी बनी रहे, और अपनी ही दृष्टि से देख कर जीवन का मूल्यांकन कर सकें, यही तो वास्तविक रूप से संन्यास है।

संन्यास में व्यक्ति जाग्रत होता है, तो उसके साथ उसकी समस्त शक्तियां जाग्रत हो जाती हैं, उसे यह ज्ञान हो जाता है, कि वह कितना कुछ कर सकता है, बन्धे हुए आदमी से क्रियाशीलता की अपेक्षा नहीं की जा सकती, संन्यास तो अपने आपको खोल देने की प्रक्रिया है, जिस प्रकार यदि दर्पण पर धुन्ध अथवा भाप छा जाय तो आप अपना स्वयं का मुख भी स्पष्ट नहीं देख सकते हैं, इसी प्रकार संन्यास में इस धुन्ध को हटा कर जीवन के दर्पण को स्वच्छ कर अपने-आपको, अपने वास्तविक रूप को देखने, पकड़ने की प्रक्रिया है।

और यह याद रखो कि जब एक बार जीवन को पकड़ने का ज्ञान हो जायेगा, प्रक्रिया प्रारम्भ हो जायेगी, तो उस प्रक्रिया की दूसरी श्रृंखला, दूसरा कदम अपने आप मालूम पड़ने लगेगा, फिर न तो कोई खींच सकेगा और न ही कोई रोक सकेगा, स्थितियां सुलझती जायेंगी, और आपकी बुद्धि प्रस्फुटित होती रहेगी।

संन्यास कौन ग्रहण कर सकता है ?

- जो व्यक्ति अपने आपको परखना चाहता है—उसे संन्यास ग्रहण करना चाहिए।
- जो व्यक्ति अपने जीवन के भीतर ताजगी भरना चाहता है, अपनी बुद्धि को जाग्रत करना चाहता है, अपनी सम्यक दृष्टि से सब कुछ देखना चाहता है—उसे संन्यास ग्रहण करना चाहिए।
- जो व्यक्ति जीवन के सब सुखों को अपनी बुद्धि के अनुसार परखना चाहता हो, और उन्हें प्राप्त करना चाहता हो-उसे संन्यास ग्रहण करना चाहिए।
- जीवन में जो अब तक करते आये हो, उसी ढर्रे से जीवन को चलाओगे तो जीवन में नवीनता आ ही नहीं सकती, उसमें केवल मर्यादाएं, वर्जनाएं, रोक-टोक हो सकती है, और संन्यास उन्मुक्त हो कर आकाश में पक्षी की भांति उड़ने की प्रक्रिया है।

सन्यास के लिए घर छोड़ना आवश्यक नहीं है, भगवे कपड़े धारण करना आवश्यक नहीं है, और न ही हिमालय की गुफाओं में छिप कर बैठना है, संन्यास, गृहस्थ धर्म से जुड़े हुए भी ग्रहण किया जा सकता है; गृहस्थ छोड़ कर जाने वाला व्यक्ति अपनी अपूर्ण वासनाओं के घेरे में बन्द रहता है, उसे मुक्ति नहीं मिल सकती, जब कि संन्यास का अर्थ है मन के भीतर की पूर्ण मुक्ति, गृहस्थ संन्यासी कुछ समय के लिए अलग जा कर अपनी दृष्टि से स्थितियों का अवलोकन कर सकता है, गुरु के पास आ कर ज्ञान प्राप्त कर सकता है, जिससे उसे अपनी चेतना को समझने का अवसर प्राप्त हो सके, उस समय जब वह गुरु के पास बैठा हो तो एक अलग दृष्टि से सब स्थितियों का अवलोकन कर कर सकता है, और उसे यह ज्ञान हो सकता है, कि उसे जीवन में क्या करना है, किस प्रकार से करना है, और जो देह के भीतर पूर्ण स्वाद देने वाला, रस-अमृत बरसाने वाला, बुद्धि को जाग्रत करने वाला तत्व है—वह कैसे विकसित हो, जिससे व्यक्तित्व भीड़ से अलग बन सके, जीवन में परिपूर्णता आ सके।

इसीलिए शिष्य बार-बार गुरु के पास आता है, प्रश्न पूछता है, प्रश्नों को सुलझाना चाहता है, वहां भी उसकी गाड़ी अटक जाती है, वह पुनः आ कर पूछता है, इसीलिए शिष्य घर में भी गुरु के पास ही रहता है, उसके भीतर गुरु की दी हुई ज्योति रहती है।

संन्यास दीक्षा—दिव्य भाव जागरण

जीवन निरन्तर आगे बढ़ने की प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया में भी आपको कई क्रियाएं सम्पन्न करनी पड़ती हैं, कई लोग पीछे छूट जाते हैं, कई नये लोग आ कर जुड़ जाते हैं, इस यात्रा में दूसरों की ओर तो आप सब ध्यान रखते हैं, लेकिन अब समय आ गया है, कि अपने बारे में भी सोचें कि मेरे भीतर क्या कम है, क्या इसे ठीक किया जा सकता है? यदि कुछ कम है तो क्या उसका विस्तार किया जा सकता है? यह प्रश्न अब उठने चाहिए आपके मन में, और इसके लिए क्या करें?

इसके लिए आवश्यक है **"संन्यास दीक्षा"** जो आपको सबसे जोड़ते हुए भी अलग कर देती है, संन्यास दीक्षा व्यक्ति को कमल के फूल के समान बनाने की प्रक्रिया है, जिससे वह कीचड़ में रहते हुए भी ऊपर रहे, स्वच्छ रहे, निर्मल रहे।

यह सरल नहीं है, यह दीक्षा योग्य गुरु से ही प्राप्त करनी चाहिए, योग्य गुरु के सम्बन्ध में **"मालिनी विजय तन्त्र"** में बिल्कुल सही लिखा है, कि केवल सिद्धियां प्राप्त किये हुए योगी को गुरु नहीं कहा जा सकता, जो अपना स्वरूप भी जानते हैं, और दूसरे के स्वरूप में बदलाव भी ला सकते हैं, जो गुरु भोग, मोक्ष और विज्ञान तीनों स्थितियों में पूर्ण हो, वही गुरु दीक्षा दे सकता है, और उसी गुरु से दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

एक बार मन के भीतर संन्यास तत्व का बीजारोपण हो गया, तो फिर आपको कोई रोक नहीं सकेगा, भीतर ही भीतर नवीन दिव्य भाव जाग्रत होते रहेंगे, बुद्धि का विकास तीव्रतम रूप में होगा, आनन्द का स्वरूप निराला होगा, बन्धन उस समय आपको चुभेगा नहीं, उन बन्धनों को किस प्रकार सरल किया जा सकता है और अपने 'मैं' को किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता है, इसका बोध हो सकेगा।

यह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है सन्यास द्वारा, और इसके लिए आवश्यक है संन्यास दीक्षा ग्रहण करना, और अपने मन के द्वार खोलना, बस इतना ही।

संन्यास-दीक्षा घर बैठे प्राप्त करें

शंकराचार्य-दिवस पर

पूर्ण गृहस्थ रहते हुए भी

(१८-५-९१)

प्रातः छः बजे से दोपहर बारह बजे के बीच

दीक्षा-क्रम में संन्यास-दीक्षा सबसे महत्वपूर्ण दीक्षा है, साधक द्वारा अपने जीवन में नवीनता लाने हेतु अपने आपका स्वनिर्माण करने की प्रक्रिया है, यह अपनी शक्तियों को जाग्रत करने की महत्वपूर्ण दीक्षा है।

दीक्षा का माध्यम केवल गुरु ही हो सकते हैं, और गुरु स्पर्श द्वारा दीक्षा प्रदान करें अथवा मंत्र द्वारा दीक्षा प्रदान करें, या दूरस्थ स्थान पर स्थित शिष्य के भीतर दिव्य भाव जाग्रत कर, उसे दीक्षा प्रदान कर शुद्ध मार्ग पर लाएं, संन्यास दीक्षा, स्मार्ती दीक्षा और योगी दीक्षा का ऐसा

सुन्दर स्वरूप है, जो गुरु कृपा से समर्पित शिष्य को प्राप्त होता है।

जो शिष्य सद्गुरुदेव के सम्मुख उपस्थित हो कर दीक्षा प्राप्त करते हैं, वह तो अपने आपमें अद्भुत है ही, परन्तु गुरु अपने शिष्य को किसी भी स्वरूप में किसी भी स्थान पर दीक्षा प्रदान कर सकते हैं, गुरु-कृपा से जब शक्ति जाग्रत होती है, तो शिष्य को आसन, प्राणायाम, मुद्रा कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं होती, कुण्डलिनी प्रबुद्ध होकर ऊपर ब्रह्मरन्ध्र में जाने के लिए छटपटाने लगती है, और इस महाक्रिया में कुछ क्रियाएं अपने आप हो जाती हैं, और यही आसन, मुद्रा, बन्ध, और प्राणायाम है, शक्ति का मार्ग खुल जाने के बाद ये सब क्रियायें अपने आप होती हैं, और चित्त को अधिक से अधिक स्थिरता प्राप्त होने लगती है।

संन्यास दीक्षा दिवस

शंकराचार्य दिवस संन्यास-दीक्षा का दिवस है, और यही वह सिद्ध मुहुर्त है, जिस दिन प्रत्येक शिष्य को मानसिक दीक्षा और ध्यान दीक्षा के सर्वोत्तम स्वरूप-संन्यास दीक्षा को ग्रहण अवश्य करना चाहिए, इस दीक्षा के बिना कुछ भी पूरा नहीं हो सकता।

संन्यास दीक्षा ही वह बिन्दु है, जहां साधक अपनी जड़ता, अपनी स्थिरता को त्याग कर गतिमान होने की दिशा में अग्रसर हो सकता है, शक्ति-तत्व को तीव्र करने का यह सबसे महत्वपूर्ण सोपान है।

संन्यास दीक्षा क्रम

इस महत्वपूर्ण दीक्षा के तीन क्रम हैं, और इसी क्रम से शिष्य अपने स्थान पर स्थित हो कर पूजन, ध्यान सम्पन्न करे तो उसे पूर्ण दीक्षा प्राप्त होती है, इन तीन क्रमों में ध्यान-क्रम, ज्ञान-क्रम, और शक्ति-क्रम है और इसी रूप में शिष्य शक्तिपात से आत्म साक्षात्कार कर सकता है।

ध्यान क्रम

दीक्षा दिवस के दिन शिष्य प्रातः ब्रह्म मुहुर्त में उठ कर स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठ कर सर्वप्रथम अपने चित्त में स्थिरता लाने हेतु "ॐ नमः शिवाय" की एक माला का जप करें, अब अपने सामने गुरु चित्र स्थापित कर स्वयं के तिलक लगाएं, और एक दीपक स्थापित कर गुरु का ध्यान करें, यह शिव स्वरूप गुरु का ध्यान अत्यन्त महत्वपूर्ण है—

"मस्तक ब्रह्मरन्ध्र के सहस्त्रार चक्र में शिव स्वरूप मेरे गुरुदेव विराजमान हैं, और उनकी अंगकान्ति, पुष्प माला, वस्त्र श्वेत हैं, और गुरुदेव के मुख पर सहज मुस्कान है, उनके दो हाथ अभय तथा वर की मुद्रा से शोभित हैं, तथा दोनों नेत्र शिष्यों के दुःखों का हलाहल विष पीने के कारण लाल दिखाई देते हैं, गुरु के इस स्वरूप को मुझ शिष्य का सहस्त्र बार प्रणाम।"

अब चरण पादुका मन्त्र का दस बार जप कर जल समर्पित करें—

गुरु-पादुका मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल वर यीं ह्सौं स्हौं श्रीप्रकाशानन्द श्रीनाथ पादुकां पूजयामि ॥

अब गुरु चरणों में कुंकुंम, पुष्प और अक्षत अर्पित करें।

ज्ञान क्रम

अब शिष्य पूरे क्रम में अपने भीतर ज्ञान भाव को जाग्रत करता है, अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करें—

"मैं पूज्य गुरुदेव को अपने पूरे शरीर में स्थापित करने का संकल्प कर रहा हूं।"

इस संकल्प के पश्चात् पांच उपचार द्वारा पूजन करें–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ।
यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि ।
रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि ।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि ।

प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के साथ ही शिष्य क्रमशः गंध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य (प्रसाद) अर्पित करें और एक माला गुरु-मन्त्र का जप करें ।

शिव-शक्ति क्रम

इस महत्वपूर्ण क्रम में शिष्य अपने सामने शिव का ध्यान करे, गुरु के शिव स्वरूप का आवाहन करे—

"तुम्हीं सूर्य हो, तुम चन्द्र हो, वायु हो, अग्नि हो, जल हो, आकाश हो, पृथ्वी हो, तुम्हीं आत्मा हो, मैं ऐसा कोई तत्व नहीं देखता, जो तुम नहीं हो, मैं इससे परे कुछ भी नहीं देखता और इससे परे मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है।"

अब शिष्य, शिव के अष्टमूर्ति स्वरूप का ध्यान करते हुए- "शिवोऽहं" का १०८ बार उच्चारण करें, और प्रत्येक उच्चारण के साथ एक रुद्राक्ष अर्पित करें ।

यह पूर्ण हो जाने पर शिष्य नेत्र बन्द कर कम से कम दस मिनट के लिए मौन हो कर अपने स्थान पर बैठा रहे, अपने आपको विचार-भाव शून्य बना ले, यही वह समय है जब गुरु, शिष्य में शिव-भाव को पूर्ण जाग्रत कर, उसमें शक्ति-भाव का समावेश करते हैं, फिर नमस्कार कर, शिव-आरती, गुरु-आरती सम्पन्न कर, प्रसाद ग्रहण करे ।

कांगड़ा

धरती की सर्वोत्तम प्राकृतिक सौन्दर्य घाटी

देव दर्शन साधना शिविर

(२६, ३०, ३१, मई १६६१)

हिमाचल अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्वविख्यात है, प्रकृति ने जितना सर्वोत्तम श्रृंगार यहां पर किया है, उतना और कहीं पर भी दिखाई नहीं देता, यहां अछूता सौन्दर्य है, दिलकश व लुभावने दृश्य हैं, मनोहर एवं मनोरम वादियां हैं, और पग-पग पर प्राकृतिक सुन्दरता है।

कुल्लू मनाली शिमला आदि स्थान तो भीड़-भाड़ से युक्त होने के कारण अपना प्राकृतिक सौन्दर्य खो बैठे हैं, परन्तु कांगड़ा अभी तक अपने आपमें अछूता है, और प्रतिपल अपना सौन्दर्य बिखेरता रहता है, हिमाचल में जो भी पर्यटक आता है, उसकी इच्छा कांगड़ा में जाने और यहां की प्रकृति को अपने आंखों में उतारने की रहती है, यहां पर प्रकृति ने अपना नैसर्गिक सौन्दर्य खुल कर लुटाया है।

जब पूरा भारत वर्ष गर्मी से संतप्त होता है, गर्म हवाएं शरीर को बेंध डालती हैं, उस समय हिमाचल अपनी ठंडी हवाओं, प्राकृतिक सौन्दर्य और माधुर्यता से मनुष्य को इतना अधिक सुख प्रदान करता है, कि वह पूरे वर्ष भर के लिए तरोताजा हो कर काम करने के लिए तैयार हो जाता है।

देव दर्शन शिविर

'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की यह इच्छा रही है, कि वह अपने सदस्यों को सम्पूर्ण भारतवर्ष से परिचित करा दे, और अलग-अलग स्थानों पर इस प्रकार के शिविर आयोजित करे, कि वे अपने आपमें अद्वितीय बन सकें, कांगड़ा तो देवताओं की घाटी ही कहलाता है, यहां पर मंदिरों की बहुतायत है, और प्रत्येक स्थान और प्रत्येक मन्दिर अपने आपमें अपूर्व सौन्दर्य लिये हुए है।

इस बार २६,३०,३१ मई को देवताओं की घाटी कांगड़ा में ही **"देव दर्शन साधना शिविर"** लगाने का निश्चय किया है, और जिस क्षण से यह सूचना सदस्यों

को प्राप्त हुई है, उनमें उत्साह आ गया है, ज्यादा से ज्यादा सदस्य यहां के वैभव, यहां की प्रकृति और सौन्दर्य को देखने के लिए लालायित हो उठे हैं, इस बार शिविर प्रकृति की गोद में ही पूर्ण माधुर्य के साथ गुरुदेव सम्पन्न करायेंगे, और उन साधनाओं को प्रत्यक्ष करेंगे जिनके माध्यम से विविध देवताओं के दर्शन हो सकें और जीवन पवित्र दिव्य एवं अद्वितीय बन सके, यह शिविर तीन दिन का होगा और तीनों ही दिन साधक उस आनन्द को अनुभव कर सकेंगे, जो अपने आपमें अद्वितीय है।

क्या देखें

सही अर्थों में कहा जाय तो जब तक कांगड़ा घाटी नहीं देख ली जाती, तब तक वास्तविक हिमांचल को पहिचाना ही नहीं जाता, क्योंकि यह घाटी जहां प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए मशहूर है, वहीं विविध मन्दिरों और देवियों के लिए विख्यात भी।

आयोजकों का प्रयत्न यही है, कि साधकों को ज्यादा से ज्यादा स्थानों को दिखाने का प्रयत्न करें, यहां के कुछ मन्दिर तो विश्वविख्यात हैं जिसमें ज्वाला जी, चिन्तपूर्णी मन्दिर, वज्र`श्वरी मन्दिर, चामुण्डा मन्दिर, तो पूरे विश्व में विख्यात हैं, पिछले वर्ष वज्र`श्वरी मन्दिर में बीस लाख से भी ज्यादा रुपयों की आय हुई थी, इसी से ज्ञात हो हो सकता है, कि इन मन्दिरों का कितना अधिक महत्व लोगों में है।

कांगड़ा

यह अपने आपमें शानदार शहर है, और इसके दो तीन बाजार तो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, यहां का पांगी बाजार, तिब्बती बाजार तो दूर-दूर तक मशहूर है, जिसमें विविध वस्तुएं अत्यन्त कम मूल्य में प्राप्त होती हैं, इसके अलावा कांगड़ा अपने सौन्दर्य के लिए भी अत्यधिक विख्यात है।

कांगड़ा में कई अच्छे होटल भी हैं, यदि साधक चाहें तो इन होटलों का उपयोग कर सकते हैं—

अशोक होटल - मेन रोड, फोन-१४७।
ग्रान्ट होटल—बस स्टेशन के पास।
जय होटल - मेन रोड, फोन-१९७।
माऊन्ट व्यू होटल—मेन रोड।
राज भवन होटल—बस स्टैन्ड।

ज्वाला जी मन्दिर

कांगड़ा से मात्र तीस किलोमीटर दूर ज्वाला देवी का अत्यन्त प्राचीन और ऐतिहासिक मन्दिर है, इस मन्दिर में कोई मूर्ति नहीं है, लेकिन दैविक चमत्कार के रूप में यहां निरन्तर अग्नि ज्योतियां प्रज्ज्वलित रहती हैं, जो सैकड़ों वर्षों से बराबर जल रही हैं।

कुछ राजाओं ने इन ज्योतियों को मात्र गैस बता कर सैकड़ों मन लोहे की चद्दरों से ढकना चाहा, लेकिन ज्योतियां फिर भी जलती रहीं।

पौराणिक दृष्टि से कहा जाता है, कि यहा पर मां सती की जीभ गिरी थी, जिससे यह ज्वाला उत्पन्न हुई, सैकड़ों हजारों लोग नित्य यहां दर्शन करने के लिए आते हैं, यहां साधक जो भी इच्छा करता है, उसकी इच्छा अवश्य ही पूरी होती है।

चिन्तपूर्णी मन्दिर

कांगड़ा से मात्र ३५ किलोमीटर दूर चिन्तपूर्णी मन्दिर है, यह एक ऐसी शिला है, जो बिना किसी सहारे के रुकी हुई है, कहते हैं कि यहां साधक की जो भी इच्छा होती है, दर्शन करने पर वह इच्छा अवश्य ही पूरी हो जाती है, यहां विवाह की इच्छुक लड़कियां चुन्नी चढ़ाती हैं, तो शीघ्र ही मनोवांछित व्यक्ति से विवाह हो जाता है।

मां वज्र`श्वरी मंदिर

कांगड़ा घाटी का यह सबसे खूबसूरत और शानदार मन्दिर है, लाखों लोग यहां दर्शन करने आते हैं, पौराणिक दृष्टि से यहां सती के वक्ष का भाग गिर गया था, इसीलिए

इस स्थान की अत्यधिक महत्ता है, मन्दिर की शैली अपने आप में अद्वितीय है, जिसको देखने की इच्छा बनी रहती है।

चामुण्डा मन्दिर

हमने एक दिन शिविर चामुण्डा मन्दिर पर रखा है, यह कांगड़ा से २० किलोमीटर दूर है, यह भारत का प्रसिद्ध शक्ति पीठ है, धौलाधार पहाड़ियों से घिरा हुआ, वाण गंगा नदी के एक छोर पर स्थित यह भव्य स्थान अत्यन्त प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है, पर्यटक यहां आकर अलौकिक शान्ति को प्राप्त करता है, यदि यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते ही रहें तो भी जी नहीं अघाता, यहां से कुछ ही दूरी पर एक सुन्दर झील है, जिसका पानी कांच की तरह साफ और अद्वितीय है, कहते हैं कि इस झील में स्नान करने से सभी प्रकार के रोग स्वतः मिट जाते हैं।

बैजनाथ मन्दिर

कांगड़ा से १३ किलोमीटर दूर बैजनाथ का सर्वाधिक प्राचीन व ऐतिहासिक मन्दिर है, सम्पूर्ण मन्दिर पत्थर का बना हुआ है, इस मन्दिर की विशेषता यह है, कि इसके विशाल गुम्बद को बिना कोई जोड़ लगाये एक ही विशाल चट्टान को तराश कर बनाया गया है, यह मन्दिर भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

इस मन्दिर से थोड़ी दूरी पर नदी के किनारे एक प्राकृतिक स्तंभ है, प्रत्येक प्रेमी और प्रेमिका इस स्तंभ को अवश्य छूते हैं, कहते हैं कि इससे उनकी इच्छाएं और मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं, यहां यह भी कहावत है कि जिनकी दोनों बांहों में यह स्तंभ पूरा आ जाता है उनके प्रेम को कोई अलग नहीं कर सकता।

धर्मशाला

धौलाधार पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित धर्मशाला एक सुन्दर शहर है, अंग्रेजों का यह प्रिय पर्वतीय स्थल रहा है, ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर जमी श्वेत बर्फ मुकुट सी प्रतीत होती है, कांगड़ा से यह मात्र १३ किलोमीटर दूर है, यहां मेकडाल गंज, भगसूनाथ मन्दिर, कुणाल पथरी, डल लेक आदि अत्यन्त प्रसिद्ध हैं, दलाई लामा कई वर्षों से यहीं रहते हैं, और यदि साधक चाहें तो उनसे मिल सकते हैं।

चंबा

चंबा तो संसार का एक महत्वपूर्ण शहर माना गया है, जो कि डलहौजी से ४४ किलोमीटर तथा पठानकोट से १२२ किलोमीटर की दूरी पर है, कांगड़ा के यह पास में है, प्रकृति की दृष्टि से चंबा की झील पूरे विश्व में विख्यात है।

चंबा में कई मन्दिर विख्यात हैं, जिनमें लक्ष्मीनारायण मन्दिर, चौगान आदि हैं, यहां का मणि महेश धार्मिक मन्दिर सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है, यहां एक धार्मिक झील है,इसमें झांकने पर भगवान शिव, पार्वती के साथ भ्रमण करते हुए स्पष्ट दिखाई देते हैं।

यों भी चंबा में ठहरने के लिए अखण्ड चण्डी होटल, चम्पक होटल, हिमाचल लाज, कृष्णा लाज आदि सुविधाजनक स्थान हैं।

कैसे पहुंचें

कांगड़ा जाने के लिए एक रास्ता तो पठानकोट होकर है, पठानकोट से १२२ किलोमीटर दूर कांगड़ा है, दिल्ली से पठानकोट रेल जाती है, और वहां से बसें मिल जाती हैं।

हवाई सेवा

हाल ही में गग्गल में हवाई अड्डा बन जाने से कांगड़ा तक वायु मार्ग सेवा उपलब्ध हो गई है, दिल्ली से नित्य वायुयान गग्गल हवाई अड्डे तक जाता है, यह हवाई अड्डा धर्मशाला और कांगड़ा के बीच में है, कांगड़ा से यह मात्र १३ किलोमीटर दूर है।

बस मार्ग

यदि सड़क मार्ग से जाना चाहें तो राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या १, १ (अ) और २१ के द्वारा पठानकोट से जुड़ा हुआ है, दिल्ली से बस द्वारा भी पठानकोट हो कर कांगड़ा पहुंचा जा सकता है।

विशेष बस व्यवस्था

ऊपर हमने रेल और बस के द्वारा जाने का रास्ता बताया, परन्तु यह लम्बा रास्ता है, और पंजाब को पार करते हुए पठानकोट तक जाना होता है।

साधकों की सुविधा के लिए हमने दिल्ली से मात्र दो बसें भेजने की व्यवस्था की है, जो कि २७ मई को बिड़ला मन्दिर से रवाना होंगी, यह बस प्रातः ८ बजे रवाना हो जायेगी और शाम को सात बजे कांगड़ा पहुंच जायेगी, बस का रूट सुरक्षित हरियाणा से हो कर निकाला है, रास्ता सभी दृष्टियों से सुविधाजनक है, और लगभग पूरा का पूरा रास्ता हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश से हो कर गुजरता है।

दो बाई दो बस

यह सुविधाजनक और चौड़ी सीट वाली बस होती है, जिसमें ३५ सवारी बैठती हैं, इसका किराया ६५१)रु० प्रति सवारी है।

तीन बाई दो बस

यह भी आरामदायक बस है, और इसमें ४५ सवारी बैठती हैं, इसका किराया प्रति सवारी ४६५)रु० है।

साधकों के लिए इस प्रकार की बसों से जाना ज्यादा सुविधाजनक रहेगा, क्योंकि हमने व्यवस्था यह की है, कि कांगड़ा जाने के बाद जो आस-पास स्थान हैं, जैसे कि चामुण्डा ३५ किलोमीटर है, बैजनाथ ४० किलोमीटर है, और एक-एक दिन इन स्थानों पर शिविर लगाने की योजना है, तो अलग से बस या टैक्सी करना साधक के लिए कठिनाईपूर्ण और व्ययशील होगा।

जबकि उपरोक्त किराये में हमने उनसे व्यवस्था की है, कि वे इसी किराये में इन सभी स्थानों पर ले जाएंगे, और शाम को वापिस कांगड़ा लाएंगे, फलस्वरूप साधक सुविधा से ज्वाला जी, चिन्तपूर्णी, चामुण्डा आदि स्थान देख सकेंगे, इस किराये में कांगड़ा, चामुण्डा, बैजनाथ, ज्वालाजी, और चिन्तपूर्णी की यात्रा शामिल है, इसके अलावा किसी अन्य स्थान पर साधक जाना चाहेंगे, तो उन्हें अपनी स्वयं की व्यवस्था करनी होगी।

सामग्री

यात्रा में बिस्तर लाने की जरूरत नहीं है, पर दो चादर, गर्म स्वेटर, टार्च, कैमरा, कैमरे की रीलें आदि साथ हों तो ज्यादा उचित रहेगा, इसके अलावा खुद के उपयोग की औषधियां, बर्फ पर चलने लायक रबर के जूते आदि भी साथ रखें, पर साथ ही साथ यह भी याद रखें कि सफर में जितना कम सामान होगा उतना ही अधिक आनन्द रहेगा।

शिविर शुल्क

कांगड़ा में गर्मी के दिनों में बहुत अधिक भीड़ रहती है, फलस्वरूप सभी स्थान पूरे भरे होते हैं और तिल रखने की भी जगह नहीं होती, इसलिए हमने साधकों के ठहरने की और भोजन की अग्रिम व्यवस्था की है, जो कि सुदूर स्थान होने की वजह से काफी व्ययशील है।

दो टूक शब्दों में प्रत्येक साधक को शिविर शुल्क ६६०)रु० जमा करवाने अनिवार्य हैं, अन्यथा साधना शिविर और भोजन व रहने आदि की व्यवस्था की जिम्मेवारी हमारी नहीं होगी, और न उनसे किसी प्रकार का सम्पर्क रहेगा, यह अनिवार्य है।

इस शुल्क में आवास, भोजन, साधना सामग्री, विविध स्थानों का भ्रमण आदि शामिल है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय अवसर है, सौभाग्यदायक समय है, जब आप पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में देव दर्शन साधना तो सम्पन्न करेंगे ही, साथ ही साथ प्रकृति के अद्वितीय स्थलों का अवलोकन कर अपने जीवन को पूर्णता दे सकेंगे। ●

"ज्योतिष विज्ञान"

आधार है

भूत वर्तमान भविष्य का

आकाश की ओर दृष्टि डालते ही ग्रहों और उनके अनवरत चक्र को देखकर मानव आश्चर्य चकित हो जाता है. उसके मन में सहज ही यह प्रश्न जाग्रत होता है, कि आखिर ये ग्रह क्या हैं? इनका गति चक्र क्या है? नक्षत्र क्या हैं? तारों का टूटना क्या है? पुच्छल तारों का रहस्य क्या है? जब भी आकाश मंडल में तारों का, ग्रहों का कुछ विशेष चक्र बनता है, तो कोई बड़ी घटना पृथ्वी पर क्यों घटती है? इन ग्रहों का मानव-जीवन से क्या संबंध हो सकता है?

मानव स्वभाव के अनुरूप जब यह 'क्यों' का प्रश्न उसके मस्तिष्क में आता है, तो वह अपनी पूरी बुद्धि के साथ उसे सुलझाने में जुट जाता है, इस 'क्यों' के कारण ही मानव उन्नति के शिखर पर पहुंचा है, और यह जिज्ञासा विवेचन नित्य नये प्रश्न नित्य नये प्रकार से गणनाएं, प्रभावों का अध्ययन खोलती हैं नये पृष्ठ, नया विवेचन, इसी खोज के क्रम में ज्योतिष जैसा गंभीर विषय धीरे-धीरे सुलझ रहा है।

भारत और ज्योतिष

भारतीय ऋषियों ने आज से हजारों साल पहले इस निश्चित-अनिश्चित ग्रह गति का अध्ययन किया, उनका हर प्रकार से विवेचन किया और एक के बाद एक रहस्य सुलझते गये, और इन रहस्यों को सुलझाने के पश्चात् उनका मानव जीवन के संबंधों से विवेचन किया तो जो सत्य जिसे "फलित ज्योतिष" कहा जाता हैं, वह मनुष्य जीवन के भूत, वर्तमान, भविष्य का साकार रूप था, और सबसे विशेष बात यह हैं, कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए इसका प्रभाव अलग-अलग था, हर व्यक्ति का भूत, वर्तमान, भविष्य एक सा नहीं होता, और ज्योतिष विज्ञान द्वारा इसका निश्चित विवेचन किया जा सकता है, जो कि केवल सैद्धान्तिक रूप से ही नहीं अपितु प्रायोगिक तौर पर भी खरा उतरता है।

ज्योतिर्विज्ञान भी अन्य विज्ञानों की तरह ही निश्चित रूप से एक विज्ञान है, जो परीक्षण और अनुसंधान को

कसौटी पर खरा उतरता है, इसके भी निश्चित सिद्धान्त हैं, और उन सिद्धान्तों को जब प्रयोग की कसौटी पर कसते हैं, तो वे बिल्कुल सत्य सिद्ध होते हैं, लेकिन जिस प्रकार किसी भी विज्ञान के सिद्धान्त समझ लेने मात्र से उस विषय में पूर्ण पारंगत नहीं हुआ जा सकता, ठीक उसी प्रकार ज्योतिर्विज्ञान में भी सिद्धान्तों के साथ-साथ प्रयोगों की महत्ता भी अनिवार्य है, एक डॉक्टर केवल थ्यौरी पढ़कर ही कुशल डॉक्टर नहीं बन सकता, जब तक उसके पास उसका अनुभव नहीं हो, क्योंकि बिना "प्रैक्टिकल" के थ्यौरी जड़ है, ठीक इसी प्रकार ज्योतिर्विज्ञान में भी पारंगत होने एवं इसके रहस्यों को समझने के लिए थ्यौरी के साथ-साथ प्रैक्टीकल ज्ञान भी अनिवार्य है ।

जन्म कुण्डली—चित्र है व्यक्ति का

जन्म कुण्डली अपने आप में जीवन का सम्पूर्ण चित्र है, इसके बारहों भाव मानव-जीवन की समस्त आवश्यकताओं को अपने आप में समेट लेते हैं, मानव, उसका रूप-रंग, वर्ण--भेद, सुख-दुःख, माता-पिता, व्यवसाय, धन, बन्धु, विद्या, शत्रु, रोग, मृत्यु, आजीविका, आय-व्यय आदि सैकड़ों तथ्य अपने आप में समेटे हुए है, लेकिन जब तक सिद्धांतों के आधार पर रहस्यों को स्पष्ट न किया जाय, कुण्डली रहस्यमय ही बनी रहती है, आर्ष ऋषियों ने कुण्डली में छिपे इन रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार की गणनाएं की, विभिन्न योगों का प्रयोग किया, इसीलिए उन्हें **"दिव्य द्रष्टा"** कहा गया ।

"आर्य भट्ट" जैसे महान ऋषियों ने जहां आकाशीय संरचनाओं का विशेष अध्ययन किया वहीं **"वराहमिहिर"** जैसे ऋषियों द्वारा ग्रहों और मनुष्य के आपसी संबंध, विशेष गणनाओं की रचना, ज्योतिष के गणना पक्ष के संबंध में निरन्तर नये अनुसंधान चलते रहे, विभिन्न प्रकार की विधियां विकसित हुई, अलग-अलग विधियों द्वारा विकसित इस गणनाओं से फलित पक्ष भी जांचा गया, अब एक ही व्यक्ति की कुण्डली पर अलग-अलग ज्योतिषी अलग राय देते हैं, और इसी से ज्योतिष के प्रति प्रबुद्ध वर्ग का विश्वास कम हुआ, इसका कारण यह था कि ऐसे ज्योतिषियों के पास शुद्ध गणित नहीं था, और शुद्ध गणित के आधार पर व्यक्ति विशेष के संबंध में भविष्यवाणी केवल "साइकोलोजीकल" आधार पर की जाती है, वास्तव में ये ज्योतिषी ज्योतिष विज्ञान के जानकार नहीं है, इनकी तो ज्योतिष की दुकानें ही कही जा सकती हैं, जिसमें उन्हें गुणवत्ता के बारे में कोई जानकारी नहीं, केवल पैसा कमाने की फिक्र है ।

मंत्र–तंत्र–यंत्र–विज्ञान–ज्योतिष विभाग

इस स्थिति को देखते हुए पत्रिका कार्यालय "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के अन्तर्गत ज्योतिष विभाग की स्थापना आज से ६ वर्ष पूर्व की गई, इस विभाग ने अपना अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया, ६०,००० से अधिक जन्म कुण्डलियों का अध्ययन किया, उनसे संबंधित गणित का विवेचन किया, और अलग-अलग विधियों द्वारा गणित की गई, इन सभी व्यक्तियों के जीवन की घटित घटनाओं का ब्यौरा प्राप्त कर उनकी जन्म पत्री से मिलान किया गया, और इस प्रकार नित्य नये अनुसधान होते गये, कुछ ऐसे तत्व जिनका महत्व ही नहीं समझा जाता था, उनके अनुरूप विवेचन करने पर आश्चर्यजनक परिणाम आये, सभी ग्रहों का सम्मिलित रूप से व्यक्ति विशेष पर प्रभाव का अध्ययन किया गया, प्रत्येक ग्रह के अलग-अलग प्रभाव का अध्ययन किया, व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाले एक हजार से अधिक योगों का अध्ययन किया गया, ऐसी जन्म पत्रिकाओं का विवेचन किया गया जिसमें वह व्यक्ति अत्यन्त गरीब घर में पैदा हो कर करोड़पति बन गया, और ऐसी कुण्डलियों का भी अध्ययन किया जिसमें व्यक्ति करोड़पति घर में जन्म ले कर अत्यन्त गरीब हो गया, समाज के हर वर्ग के लोगों की जन्म पत्रियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया और जैसे-जैसे निष्कर्ष निकलते गये, उन निष्कर्षों के आधार पर प्रोग्राम बनाये गये, और फिर बिल्कुल अनजान व्यक्तियों की जन्म पत्रियों पर इन निष्कर्षों को आजमाया गया ।

भविष्यवाणियां बहुत ही खरी और सटीक निकलीं, लेकिन केवल इससे ही संतोष नहीं हुआ, दशाओं के तीनों स्वरूपों "विंशोत्तरी दशा विधि" "अष्टोत्तरी दशाविधि" और "योगिनी दशा विधि" का अध्ययन किया गया, परिस्थितियां चाहे अलग हों, ले न निष्कर्ष तो एक ही मिलना चाहिए, तभी वह पद्धति शुद्ध हैं, क्योंकि ज्योतिष का आधार ही तो व्यक्ति विशेष के भूतकाल, वर्तमान काल, और भविष्यकाल से संबंधित फलित है, इसमें भेद नहीं होना चाहिए।

निरन्तर अनुसन्धान—शुद्ध गणना एवं सटीक भविष्य फल हेतु

पिछले ९ वर्षों से पत्रिका कार्यालय ज्योतिष विभाग ने सदस्यों की जन्म पत्रियों, हस्त रेखाओं तथा भविष्यफल से संबंधित कार्य बन्द कर रखा था, पूज्य गुरुदेव ने कहा, कि जब तक अनुसंधान कार्य पूर्ण न हो जाय, तब तक सदस्यों की जन्म पत्रिकाओं की रचना और भविष्यफल निर्माण उचित नहीं है, जहां कार्यालय के गणितज्ञ, फलितकर्ता अटके, वहीं पूज्य गुरुदेव ने निर्देश दिया, दक्षिण भारत की विभिन्न पद्धतियों का भी अध्ययन कर उसके श्रेष्ठ तत्वों को ले कर एक त्रुटि रहित प्रणाली का विकास किया गया, अब प्रश्न यह उठा कि इतनी सारी गणनाओं का, इतने सारे अध्ययनों का संकलन कैसे सुरक्षित रखा जाय, और इन गणनाओं को बार-बार घुमा कर अलग-अलग व्यक्ति के लिए गणना कैसे की जाय, हजारों-लाखों पृष्ठों के इस अनुसंधान को सुरक्षित रखना तो आवश्यक ही था, और इस हेतु पूज्य गुरुदेव ने आदेश दिया, कि नवीनतम जानकारी से युक्त **"कम्प्यूटर"** में इन सभी गणनाओं को, फलित विवेचन को **"फीड"** कर दें, निश्चय ही यह आदेश बहुत विचार कर पूज्य गुरुदेव ने दिया था, और अब इस सुरक्षित ज्ञान भण्डार से गणना कार्य, फलित कार्य अत्यन्त सरल हो गया है, हर कदम पर पूज्य गुरुदेव ने ज्योतिष के प्राचीन ग्रन्थों के सार की इन गणनाओं में, इस फलित भाव में भरते गये, इसके अलावा ज्योतिष की पाश्चात्य विधियों, जिसमें चीनियों द्वारा की गई गणनाओं और उनके परिणाम, मिस्र की ज्योतिष विधि का सार, प्राचीन व नवीन जापानी ज्योतिष विधि, न्यूमरोलोजी का वैज्ञानिक विवेचन भी सम्मिलित किया गया, और जो प्रोग्राम बना, वह अब तक का सर्वश्रेष्ठ ज्योतिष प्रोग्राम कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

पत्रिका कार्यालय में—सुपर कम्प्यूटर

प्रतिदिन पत्रिका कार्यालय को सैकड़ों हजारों पत्र प्राप्त होते हैं, इनमें से आधे से अधिक पत्रों में यही मांग रहती है, कि उनकेलिए शुद्ध जन्म पत्रिका का निर्माण किया जाय, और उनका भविष्य फल विवेचन किया जाय, पत्रिका सदस्यों का भी यही आग्रह बार-बार रहा है, कि 'ज्योतिष सेवा विभाग' के बिना पत्रिका कार्यालय अधूरा है, कुछ दृष्टियों से उनकी यह मांग सही भी है, यदि व्यक्ति के पास, पत्रिका सदस्य के पास पूज्य गुरुदेव जैसा विराट, भविष्यद्रष्टा है तो वे साधारण ज्योतिषियों के चक्कर में क्यों पड़ें? और पूज्य गुरुदेव के ज्ञान का लाभ उन्हें क्यों न प्राप्त हो।

उनकी यह मांग सही होते हुए भी कई कारणों से हम पूरी नहीं कर सकते थे, इसका पहला कारण तो कार्य की अधिकता और दूसरा महत्वपूर्ण कारण पूज्य गुरुदेव के पास समय की कमी थी, उनकी व्यस्तता में और उनके समय में से प्रतिदिन इस कार्य के लिए आठ घंटे लेना भी तो संभव नहीं था, और तीसरा कारण यह था, कि पत्रिका कार्यालय में ज्योतिष विभाग में ज्योतिष की अब तक की उपलब्ध सभी विधियों पर अनुसंधान चल रहा था, पूज्य गुरुदेव निर्देश देते थे, नयी विधियां बताते थे, ग्रहों के नये-नये संयोग और उनके अर्थ स्पष्ट करते थे, और जब अनुसंधान चल रहा हो, तो जब तक पूर्णता नहीं आ जाय, तब तक जन्म पत्रिका बनाना, भविष्यफल कहना पाठकों के साथ अन्याय ही होगा।

कार्यालय में जो अनुसंधान किया गया और जो फाइलें बनाई गईं उन्हें एक विकसित क्रम में, एक सूत्र में

पिरोया गया, एक ही व्यक्ति की भविष्य फल संबंधी गणना अलग-अलग विधियों से की गई, और जब सब विधियों में एकरूपता आ आई, तो उसे फाइलों में सुरक्षित कर दिया गया, जिन विधियों में कुछ त्रुटि थी, उनमें सुधार किया गया, और अब फाइलों के ढेर पर ढेर एकत्र होते गये, यदि एक व्यक्ति की शुद्ध जन्मपत्रिका बनानी होती और साथ में उसका भविष्यफल भी, तो कम से कम सात-आठ दिन लग जाते।

और इन सब स्थितियों को विचार में रखते हुए, पूज्य गुरुदेव ने निर्देश दिया कि एक "सुपर कम्प्यूटर" कार्यालय में स्थापित किया जाय, और सब "डाटा" गणनाएं उसमें "फीड" कर दी जांय, सभी विधियां समानान्तर रूप से चलती हुई एक व्यक्ति के कुण्डली का विवेचन करें और पूरी शुद्ध जन्मपत्रिका का निर्माण हो, एक सही भविष्यफल स्पष्ट हो, और इसके लिए शुद्ध जन्म पत्रिका का स्वरूप एक दर्पण की ही भांति है, यदि आपकी जन्म पत्रिका सही है, तो जिस प्रकार दर्पण में आप देख सकते हैं, उसी प्रकार शुद्ध जन्म पत्रिका से सही भविष्यफल का विवेचन किया जा सकता है, यदि जन्म पत्रिका रूपी दर्पण ही गलत है, तो सब कुछ टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देगा, इसीलिए जितना महत्व फलित पक्ष का है, उतना ही महत्व गणित पक्ष का है, और जिस ज्योतिषी को शुद्ध गणित का ज्ञान नहीं है, वह शुद्ध भविष्यफल बता ही नहीं सकता।

इस सम्बन्ध में बाजार में जो कम्प्यूटर उपलब्ध थे और जो ज्योतिष प्रोग्राम संबंधी दुकाने खोली हुई थीं, उनका आधार ही गलत था, क्योंकि कम्प्यूटर तो वही बोलेगा, जो आप उसमें भरोगे, यदि ज्योतिष की सभी विधियों का सार डाला जाय, गणना की विभिन्न विधियां डाली जांय तो फिर उससे जन्म पत्रिका का निर्माण होगा, वह शुद्ध होगा, और इसीलिए एक कम्पनी को विशेष रूप से आर्डर दे कर **"सुपर कम्प्यूटर"** का निर्माण कराया गया तथा प्रोग्राम में दस वर्ष के अनुसंधान को उसमें फीड किया गया, जो कमियां थीं वे दूर की गई, और अब पूज्य गुरुदेव के आदेश से यह द्वार खोल दिया, पत्रिका सदस्यों और जनसाधारण के लिए।

उद्घाटन दिवस २१ अप्रैल—अमृत महोत्सव

२१ अप्रैल अमृत महोत्सव है, पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस है, और इस दिन सब सदस्यों के लिए यह जन्म-पत्री, भविष्य फल, निर्माण सम्बन्धी कार्य प्रारम्भ कर दिया जायेगा, जिससे सदस्यों की एक बहुत बड़ी मांग पूरी हो सके, शुद्ध जन्म पत्री तो एक **"लाइफ इन्श्योरेन्स"** पॉलिसी के समान है, जिसमें आप सुरक्षित कर देते हैं अपना आगे का भविष्य, और बना लेते हैं उसके अनुसार अपने भविष्य की योजनाएं, शुद्ध जन्मपत्री और शुद्ध भविष्यफल से आप यह जान सकते हैं, कि आपको किस दिशा में आगे बढ़ना है, आपके कौन सहयोगी हैं, कौन मित्र हैं, और कौन शत्रु, किस प्रकार के कार्य में आपको विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है, कार्य के मार्ग में कौन-कौन सी बाधाएं आएंगी जीवन में कब-कब समय हलका है और कब-कब समय उत्तम है, उत्तम समय को पहिचान कर यदि व्यक्ति पूरे परिश्रम से कार्य करे तो वह अपनी उन्नति निश्चित रूप से प्राप्त कर सकता है, कौन सा अंक उसके लिए शुभ है, किस के साथ उसे भागीदारी करनी चाहिए, कौन व्यक्ति उसे धोखा दे सकता है, परिवार में भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा अथवा नहीं ? स्वास्थ्य की दृष्टि से आने वाला समय कैसा है ? कब समय हलका है ? कब समय उत्तम है ? गृहस्थ जीवन किस प्रकार चलेगा ? पत्नी कैसी प्राप्त होगी ? पत्नी का सहयोग कैसा रहेगा ? संतान योग कैसा है ? आगे क्या स्थिति होगी ?

ये तो **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** के ज्योतिष विभाग द्वारा भेजे जाने वाले भविष्यफल की छोटी सी रूपरेखा है, ऐसे ही जीवन का हर पक्ष स्पष्ट किया जायेगा, और प्रत्येक विवरण पूर्ण प्रामाणिकता के साथ।

ज्योतिष विभाग द्वारा गणित एवं फलित संबंधी किये जाने वाले कार्यों का विवरण एवं सूची निम्न है —

१- जन्मांक्षर (टेवा)

इसमें जन्म कुण्डली, चलित भाव, ग्रह स्पष्ट, विंशोत्तरी दशा आदि विवरण शामिल हैं, इसके अतिरिक्त जन्म नक्षत्र-स्वामी, कोई विशेष स्थिति, प्रबल ग्रह, निर्बल ग्रह, विशेष योग, स्पष्ट किये जाएंगे।

केवल गणित, एक वर्ष का भविष्यफल ७५) रु०

२- सप्तवर्गीय जन्म पत्रिका

इसमें — १-जन्म समय संशोधन, २-शुद्धि पुष्टि, ३-जन्म कुण्डली, ४-चन्द्र कुण्डली, ५-ग्रह स्पष्ट, ६-द्वादश भाव स्पष्ट, ७-चलित भाव, ८-होरा चक्र, ९-काल चक्र, १०-नवमांश चक्र, ११-विंशोत्तरी महादशा, १२-अन्तर्दशा तथा १३-प्रत्यन्तर दशा, इत्यादि स्पष्ट किया जायेगा।

केवल गणित १२१) रु०
गणित एवं आने वाले पांच वर्षों का भविष्यफल— २४०) रु०

३- षोडशवर्गीय जन्म पत्रिका

इसमें सप्त वर्गीय जन्म पत्रिका के सम्पूर्ण विवरण के अतिरिक्त विंशोत्तरी देशा, अष्टोत्तरी दशा, योगिनी दशा, काल चक्र विवरण विस्तार से स्पष्ट किया जायेगा, ये गणित २१ पृष्ठों की होगी।

केवल गणित १५०) रु०
पांच वर्ष का भविष्यफल १५०+१५०) रु०
दस वर्ष का भविष्यफल १५०+३००) रु०

४-विस्तृत षोडशवर्गीय जन्मपत्रिका

इसमें ऊपर दिये गये षोडशवर्गीय जन्मपत्रिका के पूर्ण विवरण के अतिरिक्त प्रत्येक भाव का अलग-अलग विस्तृत विवेचन, जन्मपत्री में बनने वाले सम्पूर्ण योग, रेखा, अष्टकवर्ग, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश, चतुर्विंशांश, सप्तविंशांश, त्रिंशांश, खवेदांश, वर्गभेद अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, तथा प्राणदशा सम्मिलित है।

केवल गणित २४०) रु०

पंचवर्षीय भविष्यफल-प्रत्येक भाव का अलग-अलग विवेचन, जिसमें—व्यक्तित्व, आय, माता-पिता, परिवार, बुद्धि, संतान, विवाह, गृह-सुख, प्रेम, शौक, व्यवसाय, लाभ-हानि, रोग, शत्रु, मकान आदि सम्मिलित है, का विवेचन गोचर ग्रहों के आधार पर— —२४०+२४०) रु०

दस वर्षीय भविष्यफल जन्म पत्रिका के निर्माण तथा ऊपर दिये गये भविष्यफल के अतिरिक्त दस वर्षीय भविष्यफल गणित सहित— २४०+३६०) रु०

५- वर्ष फल विशिष्ट

जन्म पत्रिका के साथ-साथ वर्ष फल भी उतना ही आवश्यक है, वर्ष फल में एक पूरे वर्ष विशेष का महीनेवार, दिनवार, गणित तथा फलित स्पष्ट किया जाता है, वर्ष फल तो एक विशेष मार्गदर्शक है, जिसके हिसाब से आप व्यापारिक कार्य में, नौकरी में अपने निर्णय सही रूप में ले सकते हैं, इसमें वर्ष फल, जन्म लग्न, चलित, वर्ष नवमांश, मुन्था, पंचवर्गीय-बल, वर्षेश, हर्षबल, विंशोत्तरी दशा, प्रत्यन्तर दशा, तथा प्राण दशा, प्रत्येक माह की कुण्डली आदि शामिल है।

केवल गणित मात्र १५०) रु०
गणित एवं विस्तृत वर्ष भविष्यफल, गणित सहित १५०+२००) रु०

६- विशेष जन्म पत्रिका

कई व्यक्तियों को अपनी जन्म तारीख और जन्म स्थान तो ध्यान रहता है, लेकिन सही जन्म समय के अभाव में शुद्ध कुण्डली नहीं बन पाती, इसके लिए इस **"निखिल**

कम्प्यूटर" में विशेष व्यवस्था की गई है, आप अपना जन्म विवरण तथा संभावित समय और अब तक बीते हुए जीवन की घटनाएं विस्तार से लिख भेजें, अलग-अलग समय ले कर कम्प्यूटर जन्म पत्रिका निर्माण करता है, और इस प्रकार २१ प्रकार से जन्म पत्री बनाई जाती है, जिस जन्म पत्री का भविष्यफल आपकी भूतकाल की घटनाओं से पूर्णतया मिलता है, उसी आधार पर जन्म पत्रिका निर्माण किया जाता है, निश्चय ही इसमें श्रम एवं समय दोनों अधिक लगता है।

इस आधार पर सप्तवर्गीय जन्म पत्रिका—

केवल गणित २४०) रु०
पंच वर्षीय भविष्यफल, गणित सहित २४० + १५०) रु०

७- नक्षत्र एवं गोचर भविष्यफल

जन्म पत्रिका में तो ग्रहों की स्थिति स्थिर हो जाती है, जबकि ग्रह और नक्षत्र गोचर पद्धति में अपनी गति, अपना स्थान, बदलते रहते हैं, यह आवश्यक नहीं है, कि आपका आज का दिन कल बीते दिन जैसा ही हो, इसमें ग्रहों की गोचर गति का विशेष महत्व है, इस आधार पर पूर्ण जन्म पत्रिका तथा भविष्यफल बनाया जाय, तो वह आपके लिए नित्य प्रति की गाइड के समान ही होगा, इसमें राशि प्रभाव, नक्षत्र प्रभाव, लग्न, बदलती ग्रह स्थिति, शुभ अंक, शुभ दिन, शुभ वार, शुभ रंग, आवश्यक रत्न, का स्पष्ट रूप से विवेचन होगा, इसके अतिरिक्त व्यापार शारीरिक स्वास्थय, पारिवारिक संबंध, का वर्णन सम्मिलित है।

पंच वर्षीय भविष्यफल ३००) रु०
दस वर्षीय भविष्यफल ६००) रु०

८-पार्टनरशिप (व्यावसायिक संबंध)

जिस व्यक्ति के साथ आप व्यापार करने जा रहे हैं, अथवा जिसके साथ व्यापार कर रहे हैं, वह आपके लिए अनुकूल है या नहीं, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है, प्रतिकूल पार्टनरशिप आपके जीवन को छिन्न-भिन्न कर सकती है, जिससे आप मित्रता बढ़ा रहे हैं, वह आपके लिए लाभदायक है अथवा आपको धोखा देगा, इन सब महत्वपूर्ण प्रश्नों के विवेचन हेतु, आप अपना विवरण तथा भागीदार का नाम, उम्र इत्यादि भेजें, विशिष्ट आधार पर गणित कर सारी स्थिति आपके सामने स्पष्ट हो सकेगी, आपकी जन्म पत्रिका तो होनी आवश्यक है।

भागीदारी, मित्रता विचार एवं भविष्य कथन १०१) रु०

९- वर-वधू मेलापक

विवाह आधार है सम्पूर्ण जीवन का, और जीवन साथी यदि अनुकूल मिल जाय तो जीवन यात्रा अत्यन्त सुख पूर्ण और प्रगतिशील रहती है, इसके लिए पति-पत्नी दोनों के ग्रहों में आपसी तालमेल होना अत्यन्त आवश्यक है, इस हेतु दोनों की जन्म तारीख, स्थान और समय भेजें, आगे सारा काम यह सुपर कम्प्यूटर करेगा, जिससे दोनों की जन्म कुण्डली, ग्रह विवेचन, भाव स्पष्ट, दशा, चन्द्र कुण्डली, तथा सबसे अधिक **आवश्यक सप्तम भाव कुण्डली विवेचन** अध्याय (विशेष), मगल विवेचन, गुण समानता, गणना, एवं स्पष्ट निष्कर्ष का फलित प्रस्तुत किया जायेगा। १५०) रु०

१०- प्रश्न कुण्डली

किसी विशेष प्रश्न का उत्तर जानने के लिए यह विशेष गणना सम्पन्न की जाती है, आप प्रश्न लिख भेजें तथा अपनी जन्म कुण्डली अथवा जन्म स्थान, दिनाङ्क भेज दें, प्रश्न, जन्म कुण्डली के जिस भाव से सम्बन्धित होगा, चाहे वह व्यक्तित्व, आयु, स्वास्थ्य, माता-पिता संबंध, संतान, विवाह, प्रेम संबंध, आर्थिक उन्नति, लॉटरी, अथवा अथवा किसी भी विषय से संबंधित हो, उसका विवेचन आपकी जन्म कुण्डली तथा वह भाव विशेष कुण्डली बना

कर स्पष्ट किया जायेगा, जिससे निष्कर्ष स्पष्ट हो सके, और आप इसके अनुसार अपनी योजना बना सकें।

प्रति प्रश्न ५१)रु०

११- मंगल विचार, विशेष ग्रह विचार

प्रत्येक कुण्डली में एक विशेष ग्रह, उसके पूरे व्यक्तित्व के कार्यों पर प्रभाव डालता है, और यह ग्रह चाहे वह लग्नेश हो, भाग्येश हो, कर्मेश हो, उसका विवेचन आवश्यक है, अपने अनुकूल ग्रह को पहिचान कर उसके प्रबल समय में जो निर्णय लिये जाते हैं, तो कार्य श्रेष्ठ रूप से सम्पन्न होता है। गुण-दोष, बाधा निवारण, ग्रह का पूर्ण विवेचन, आगे की अनुकूलता, उचित रत्न आदि का विस्तृत भविष्यफल स्पष्ट किया जायेगा।

विशिष्ट ग्रह, मांगलिक विचार सम्पूर्ण विवेचन १०१)रु०

यह सब तो एक संक्षिप्त रूप रेखा है, जो कि वर्तमान समय में प्रारम्भ किया जा रहा है, आपके कार्यालय के इस कम्प्यूटर में व्यक्तिगत विवेचन की भी विशेष व्यवस्था है, और भी अधिक कई प्रकार की गणनाएं, फलित तथा जीवन की प्रत्येक स्थिति से संबंधित विवरण उपलब्ध हैं, आप बिना संकोच पत्र लिख कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष

आपको क्या करना है ?

ऊपर लिखे गये विषयों में से, कार्यों में से जो भी कार्य आप सम्पन्न कराना चाहते हैं, उससे संबंधित वर्णन स्पष्ट रूप से लिख भेजें, इसके अलावा संलग्न प्रपत्र पूर्ण रूप से भर कर भेज दें।

नियमानुसार ज्योतिष कार्य हेतु कम से कम आधी धनराशी अग्रिम प्राप्त होना आवश्यक है, शेष राशि की वी०पी० भेज दी जायेगी।

२१ अप्रैल से कार्य प्रारम्भ किया जायेगा और 'फर्स्ट कम फर्स्ट सर्व' के आधार पर रजिस्ट्रेशन किया जायेगा, आप निर्णय कर लें और प्रपत्र भर कर भेज दें।

आपके लिए विशेष भविष्यफल—प्रश्नोत्तर, समस्या समाधान सहित

कम्प्यूटर द्वारा दिये गये भविष्यफल के अतिरिक्त भी यदि आपकी इच्छा है, कि कार्यालय द्वारा पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार आपको व्यक्तिगत प्रश्नोत्तर, भविष्यफल, समस्याओं का सम्पूर्ण विवेचन तथा समाधान प्राप्त हो, जिससे आप महत्वपूर्ण निर्णय ले सकें, तो यह सुविधा भी आपके लिए उपलब्ध है, विशिष्ट व्यक्तिगत फलादेश से आप समस्या का समाधान प्राप्त कर भविष्य के लिए योजना बना सकते हैं, अपने जीवन को सजा-संवार सकते हैं।

व्यक्तिगत प्रश्न, समस्या विशेष से संबंधित होंगे तो आपके प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से दिये जाएंगे, जिससे आप अपने निर्णय स्वयं ले सकेंगे।

— **व्यक्तिगत गोपनीय प्रश्न, समाधान सहित** — १०१)रु०

ज्योतिष, गणित एवं फलित सूत्र तो उस प्रकाश पुंज की भांति है, जो यदि शुद्ध रूप में आपके हाथों में प्राप्त हो जाये तो जीवन की अनजानी अन्धकार भरी राह में आपको निरन्तर मार्ग दीखता रहे, दिशा निर्देश प्राप्त होता रहे, और इस अनजाने जीवन मार्ग के बाधा रूपी कांटों से बच सकें। ●

ज्योतिष कार्य संबंधी प्रपत्र

सम्पादक जी,

मैंने पत्रिका में दिये गये विवरण के अनुसार निम्नलिखित कार्य **"निखिल सुपर कम्प्यूटर"** द्वारा सम्पन्न करवाने का निश्चय किया है, इस हेतु संबंधित जानकारी निम्न है—

★ आवेदक (**जिसके लिए कार्य सम्पन्न करवाना है उसका नाम लिखें**) ....
पिता/पति का नाम..

★ जन्म तारीख (**अंग्रेजी तारीख के अनुसार**) ....

★ जन्म समय (**स्टैन्डर्ड टाइम रात्रि के १२ बजे से ००.०० से प्रारम्भ होता है, उसी के अनुसार लिखें**).....
....

★ जन्म स्थान (**गांव/शहर का नाम**) ....
(**जिला**) ....(**राज्य**)...................................

★ कार्य (**जो आप सम्पन्न कराना चाहते हैं, लिखें**) ....

★ कार्य पारिश्रमिक रु०...

मैंने ऊपर लिखे कार्य से संबंधित आधा शुल्क रु०........................., मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/.................. द्वारा, जिसका रसीद नं० .... है, भेज दिया है, कृपया मेरा रजिस्ट्रेशन कर, शीघ्र कार्य सम्पन्न करके, शेष धनराशि रु०........................ तथा डाक व्यय लगाकर वी०पी० द्वारा भेज दें, मैं वी०पी० प्राप्त होते ही छुड़ाने का वचन देता हूं।

मेरा नाम.. सदस्यता संख्या........................
मेरा पूरा पता...
....

विशेष—आप यह प्रपत्र अलग कागज पर उतार कर भी भेज सकते हैं, यदि एक से अधिक व्यक्तियों हेतु कार्य है जैसे अपने सभी बच्चों, पत्नी, भाई आदि की जन्म पत्रिका अथवा फलित कार्य है, तो सभी के नाम से अलग-अलग प्रपत्र बनाकर भेजें, गणना का आधार आप द्वारा भेजा गया जन्म समय तथा विवरण ही होगा, **धनराशि** "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान", डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०) **के पते से ही भेजें।**

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

प्रस्तुत अंक में जिन साधनाओं का विवरण दिया गया है उनसे संबंधित सामग्री निम्नवत् है, आपको जिन साधनाओं से संबंधित सामग्री की आवश्यकता हो, उसका विवरण लिख कर पत्र द्वारा कार्यालय को केवल सूचित कर दें, हम आपको यह सामग्री डाक व्यय लगा कर वी०पी० द्वारा भिजवा देंगे ।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
कुछ नवीन सिद्ध प्रयोग—	५	—	—
आत्म विश्वास सिद्धि प्रयोग	५	सिद्ध कुलाल चक्र	५१) रु०
भविष्य संकेत प्राप्ति प्रयोग	५	दर्शय चैतन्य रत्न	५१) रु०
शत्रु शक्ति-नाशक प्रयोग	५	भैरव वज्र दण्ड	३०) रु०
प्रेम में सफलता प्राप्ति प्रयोग	६	कामांक्षी कामांकुश	६०) रु०
इच्छापूर्ति का विशेष प्रयोग	६	पांच गौमुखी रुद्राक्ष	५०) रु०
संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत	६	संकर्षण गणेश विग्रह	१२०) रु०
		संकर्षण शंख	१५०) रु०
		कमलगट्टा माला	६०) रु०
अक्षय तृतिया प्रयोग	१३	अक्षय लक्ष्मी शंख	१५०) रु०
		दो मोती शंख	१२०) रु०
		कमलगट्टा माला	६०) रु०
कालाष्टमी साधना प्रयोग	१७	महाकाली यन्त्र	१५०) रु०
		अभीष्ट सिद्धि अष्ट भैरव गुटिका	९०) रु०
		शक्ति चैतन्य काली हकीक माला	११०) रु०
		११ तांत्रोक्त नारियल	१२१) रु०
कुहू अमावस्या साधना	२१	आठ शक्ति चक्र	८०) रु०
		आठ सिद्धि फल	४०) रु०
		जय विजय कूहू यन्त्र	६०) रु०
		स्फटिक माला	८०) रु०
संन्यास दीक्षा	२४	संन्यास दीक्षा पैकेट	एक नया सदस्य

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० ३६६७/८६-८७

गुरु-तीर्थ का महान उत्सव

पूज्य गुरुदेव जन्म समारोह

२१ अप्रैल १९९१ की वीडियो कैसेट

● अमृत महोत्सव ● सौभाग्य महोत्सव ● आनन्द महोत्सव

पूजा, श्रद्धा, विश्वास, समर्पण के पुष्पों से लिखा यह महोत्सव, आनन्द के केसर की सुगन्ध है, पुष्पों की बहार है—अद्भुत समारोह की वीडियो कैसेट

इस समारोह में गुरुदेव ने क्या-क्या दे दिया अपने शिष्यों को, और शिष्यों ने झोली फैला कर क्या-क्या ग्रहण कर लिया ?

आनन्द का यह उत्सव अद्भुत संगम था, भक्ति और शक्ति का, शिष्यों की ओर से भक्ति प्रवाह था, तो पूज्य गुरुदेव की ओर से शक्ति प्रवाह, ऐसा अद्भुत, जीवन्त समारोह

ध्यान योग, क्रिया योग, काया कल्प योग के कुछ अनूठे प्रयोग, जो पूज्य श्री गुरुदेव की ओर से अपने जन्म दिवस की सौगात के रूप में शिष्यों को प्रदान किये, और इस अमृत वर्षा में हर शिष्य जी भर कर आनन्द-रस पान करता रहा।

यह वीडियो कैसेट हर शिष्य के लिए, हर साधक के लिए आवश्यक है, जो जीवन को पूर्णता हेतु सजाना संवारना चाहता है, जो प्रत्यक्ष देखना चाहता है, कि वास्तविक जीवन का आनन्द क्या है, गुरु भक्ति क्या है, गुरु शक्ति क्या है ?

ऐसी अद्भुत, अनोखी वीडियो कैसेट पहली बार बन पड़ी है, और इसे शब्दों में नहीं लिखा जा सकता, क्योंकि यहां शब्द कम हैं, भाव ही भाव है, चैतन्य तत्व है।

मूल्य—मात्र १८०)रु०

। सम्पर्क ।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)